ओ३म्

# आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 01 अप्रैल 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 01 अप्रैल 2018 से 07 अप्रैल 2018

वैशाख कृ. – 01 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 59, अंक 13, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## डी.ए.वी. की तरक्की के लिए युवा छात्र रहें वचनबद्ध : डॉ. रमेश आर्य

### डी.ए.वी. बठिण्डा में हुआ युवा सांस्कृतिक कार्यक्रम

डी.ए.वी. कॉलेज बठिण्डा में तंरग–2017 नाम से रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में छात्रों द्वारा विविध प्रस्तुतियाँ पुरस्कार अर्जित कर चुकी जोनल व ईंटरजोनल में विभिन्न है, पेश की गई। कार्यक्रम में डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी के उपप्रधान डॉ. रमेश आर्य ने मुख्य मेहमान के रूप में शिरकत की। कॉलेज लोकल कमेटी के चेयरमैन पी. डी. गोयल व लोकल कमेटी मैम्बर श्री विमल गर्ग व चौधरी प्रताप सिंह, स्वामी सूर्यदेव, डी.ए.वी. स्कूल के प्राचार्य श्री प्रमोद खुरसीजा ने भी समारोह में शामिल होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी। प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा व वरिष्ठ प्राध्यापकों आगुन्तकों का स्वागत किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन

शेष पृष्ठ 11 पर

## डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर - 14, गुरुग्राम में 'जल चेतना' कार्यक्रम का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर – 14, गुरुग्राम के नन्हें – मुन्ने छात्रों द्वारा **'जल – जीवन का अमृत'** नारे के आधार पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर निगम, गुरुग्राम, के अपर आयुक्त श्री नरहरि सिंह बांगर द्वारा किया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में जल को जीवन का अमृत बताते हुए कहा – **'वारि रक्षति रक्षितः'** अर्थात् तुम जल की रक्षा करो, जल तुम्हारी रक्षा करेगा। उन्होंने साऊथ अफ्रीका के एक शहर केपटाऊन का उदाहरण देते हुए जनसामान्य को 'जल संरक्षण' हेतु प्रेरित किया तथा नन्हें – मुन्ने बालकों के प्रयास को सराहते हुए प्रदर्शनी का शुभारम्भ किया।

कार्यक्रम के आरम्भ में बाल कलाकारों द्वारा नृत्यनाटिका के माध्यम से आधुनिक परिवेश में जल– संरक्षण के तरीकों का वर्णन किया गया। विद्यालय परिसर में जल संरक्षण से संबंधित मॉडल प्रदर्शित किए गए जिनका ज्ञानवर्धक वर्णन करते हुए बच्चों द्वारा जल बचाने का संकल्प लिया गया। बच्चों के नुक्कड़ नाटक की गूँज **'जल है तो कल है, जल है तो सकल है'** अभिभावकों के हृदय में घर कर गई। इस प्रदर्शनी के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ – साथ उपस्थित जनों को जल की महत्ता से अवगत करवाते हुए जल संरक्षण हेतु प्रेरित किया गया।

## डी.ए.वी. कैलाश हिल्स, दिल्ली में लगाया गया रक्तदान शिविर

स्वामी दयानन्द के मानवता एवं परोपकार सम्बन्धी विचारों को जन–जन तक पँहुचाने के लिये डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैलाश हिल्स दिल्ली के प्राङ्गण में रैडक्रास के सहयोग से रक्तदान शिविर लगाया गया। इस महादान को कर एक शुभ काम किया। इस शिविर में लगभग 80 लोग रक्तदान करने के लिए आये जिनमें से 41लोगों ने रक्तदान किया। विद्यालय में पूरे सप्ताह विभिन्न क्रियाकलाप किये गए। इस शुभ कार्य का आरम्भ यज्ञ से किया गया। बच्चों की पोस्टर–प्रतियोगिता कराई गयी, रैली निकाली गयी, बच्चों को थैलेसीमिया एवं रक्तदान के महत्त्व पर जानकारी दी गयी। इस अवसर पर श्री निवासपुरी के निगम पार्षद श्री राजपाल सिंह ने रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। विद्यालय के मैनेजर डा.एम.एम. गोयल ने भी इस शुभ काम के लिए प्रोत्साहित किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती इरा खन्ना ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुये कहा कि हम सभी के अन्दर भगवान विद्यमान है एवं हम सभी रक्तदान कर किसी न किसी के जीवन को बचा सकते हैं। हिन्दी अध्यापिका अनीता बत्रा ने भी रक्तदान के महत्त्व पर प्रकाश डाला। संस्कृत अध्यापिका सुनीता शर्मा, काउंसलर, कुमारी नेहल,एवं विद्यालय की नर्स सुनीता सैम्बी ने पोस्टर निर्माण द्वारा,रैली द्वारा,रक्तदान सम्बन्धी वार्ता द्वारा बच्चों एवं लोगों को रक्तदान करने के लिये प्रेरित किया। विद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, लिपिकों, अभिभावकों ने प्रधानाचार्या श्रीमती इरा खन्ना ने रक्तदान करने वाले योग्य एवं श्रेष्ठजनों को आशीर्वाद एवं धन्यवाद दिया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 01 अप्रैल 2018 से 07 अप्रैल 2018

# मनोबल, सत्य, यश, श्री

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीय।**
**पशूनां रूपमन्नस्य रसो, यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।**

यजु ३९.४

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(मनसः)** मन की **(कामं)** इच्छा–शक्ति को [तथा] **(आकूतिं)** संकल्प–शक्ति को [और] **(वाचः)** वाणी के **(सत्यं)** सत्य को **(अशीय)** प्राप्त करूं। **(पशूनां)** पशुओं का **(रूपं)** रूप, **(अन्नस्य)** अन्न का **(रसः)** रस, **(यशः)** कीर्ति [और] **(श्रीः)** श्री **(मयि)** मुझमें **(श्रयतां)** स्थित हो। **(स्वाहा)** एतदर्थ आहुति देता हूं, सत्क्रिया करता हूं।

मैं चाहता हूं कि मैं एक उत्कृष्ट मानव बनूं, मेरे अन्दर विविध शक्तियाँ अपने पूर्णरूप में निवास करें। मेरे मन के अन्दर प्रबल इच्छा शक्ति (काम) और संकल्प शक्ति (आकूति) हो। मानव इच्छाएं करता रहता है, परन्तु वे पूर्ण नहीं होतीं, यह इच्छा शक्ति की दुर्बलता का चिन्ह है। योगी जन बताते हैं कि इच्छा शक्ति को बलवान् बना लेने पर मनुष्य जो इच्छा करता है वह पूर्ण होकर रहती है। वह इच्छा करता है कि अमुक पापी धर्मात्मा बन जाए, या अमुक रोगी का रोग दूर हो जाए, तो सचमुच वैसा ही हो जाता है। मन की दूसरी शक्ति संकल्प शक्ति है। संकल्प की दृढ़ता होने पर मनुष्य अपने व्रत से च्युत नहीं होता। जो व्रत एक बार धारण कर लेता है, अन्त तक उसका निर्वाह करता है। यदि वह संकल्प करता है कि मैं आज से ब्रह्मचारी रहूंगा, तो उस पर दृढ़ रहता है। यदि वह संकल्प करता है कि मैं आज से धूम्रपान करना छोड़ता हूं, तो सचमुच उसका यह व्यसन छूट जाता है। इसके विपरीत जिनमें संकल्प शक्ति की दृढ़ता नहीं होती, वे नित्य नवीन–नवीन संकल्प करते हैं, और किसी न किसी बहाने उन्हें तोड़ते रहते हैं।

मेरी यह भी कामना है कि मेरी वाणी में सत्य हो। वाणी में सत्य तभी आ सकता है, यदि मन में भी सत्य हो। यदि मन में सत्य होगा, तो वह कर्म में भी आयेगा। इस प्रकार मनसा, वाचा, कर्मणा मैं सत्यमय हो जाऊं, यह मेरी आन्तरिक अभिलाषा है। पतंजलि मुनि ने कहा है कि जिसके अन्दर सत्य प्रतिष्ठित हो जाता है, उसे क्रिया–फलाश्रयत्व प्राप्त हो जाता है, उसकी वाणी अमोघ हो जाती है। उसकी वाणी से दिये गये आशीर्वाद सत्य सिद्ध होते हैं। मेरी वाणी में भी यह दिव्य शक्ति आये।

मेरी यह भी अभिलाषा है कि मुझे गाय आदि दुधारू पशुओं का दूध यथेच्छ मात्रा में मिले, जिससे उसके सेवन से प्राप्त होनेवाला सौन्दर्य मुझमें आये। मुझे सात्विक अन्नों से मिलनेवाला रस–रक्त भी प्राप्त हो। मुझे धर्म और सत्कर्म से प्राप्त होनेवाली कीर्ति भी मिले और मेरी श्री, मेरी शोभा, दिग्दिगन्त में फैले। उक्त सब कामनाओं और आदर्शों की पूर्ति के लिए 'स्वाहा' हो, सत्क्रियाओं और सत्यप्रयासों की निरन्तर आहुति पड़ती रहे। ❑

**वेद मंजरी से**

**इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।**

# बोध कथाएँ

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

स्वामी जी ने "संन्यासी के लिए तीन आज्ञाएँ" पर कथा सुनाते हुए कहा काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के डाकू से बचने के लिए सत्संग का, सद् विचार का, सद् आचार का किला बनाकर रखें। योग और परिश्रम से जो भूख लगती है, उसमें जो रूखा सूखा खाया जाता है, उसमें पकवानों का स्वाद होता है। अच्छे विचार, योग आसन एवं ध्यान से गहरी निद्रा आती है। "जैसा दृष्टिकोण, वैसा अन्तःकरण" पर कथा सुनाते हुए कहा अन्तःकरण अच्छा हो तो दृष्टिकोण अच्छा होगा। "लोभ सरिस अवगुन नहीं" पर कथा सुनाते हुए कहा लोभ को पाप का बाप कहा गया है। प्रत्येक पाप का जन्म इसी से होता है।

**–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ**

## मुझ–सा बुरा न कोय

मैं कथा कह रहा था करोल बाग के आर्य समाज में। एक सज्जन रात के समय मुझे दूध पिलाने के लिए अपने घर ले गए। घर में जाकर बैठे ही थे कि बिजली फेल हो गई। अन्धकार हो गया। अब वे सज्जन लगे सरकार को कोसने–"कैसी सरकार है यह! जब से इनका राज्य हुआ, तब से कोई कार्य ठीक प्रकार से नहीं होता। अब देखो, बिजली ही चली गई!"

मैंने कहा–"राज्य को कोसने से कुछ बनेगा नहीं। आपके घर में कोई मोमबत्ती आदि होगी, उसे जला लीजिए, कार्य चल जाएंगा।"

तब उन्होंने पुकारा–"ओ कुक्कू की माँ! दियासलाई तो ला। देख, मोमबत्ती कहाँ है?"

अब कुक्कू की माँ ने दियासलाई ढूँढनी आरम्भ की। अँधेरे में इधर देखा, उधर देखा, कहीं भी उसे दियासलाई नहीं मिली। अन्ततः सिगरेट पीनेवाले एक सज्जन से दियासलाई ली गई। मोमबत्ती की खोज आरम्भ हुई। इस अलमारी में, उस अलमारी में, यहाँ–वहाँ। सलाइयाँ एक–एक करके घिसाई जा रही हैं, मोमबत्ती की खोज हो रही है, परन्तु मोमबत्ती है कि मिलने का नाम ही नहीं लेती। दियासलाई वाले ने कहा–"तीलियाँ तनिक देखकर खर्च कीजिए, ऐसा न हो कि मोमबत्ती मिले तो डिबिया में तीलियाँ समाप्त हो जायँ।"

इस भाग–दौड़ में बिजली फिर आ गई। प्रकाश हो गया। वे सज्जन बैठे, फिर बोले–"राज्य का प्रबन्ध ही सारा खराब है। जिस विभाग को देखो, उसी में त्रुटि है। कितना समय इन लोगों ने नष्ट कर दिया!"

मैंने यह आलोचना सुनी तो हँसते हुए कहा–"राज्य का प्रबन्ध तो अच्छा है या बुरा, परन्तु तुम अपने घर का प्रबन्ध तो देखो! न दियासलाई रखने का ठिकाना, न मोमबत्ती रखने का स्थान और कोसा जाता है राज्य को! राज्य क्या तुम्हारे घर का भी प्रबन्ध करेगा?"

वह है हमारा स्वभाव! देखनी चाहिए अपनी त्रुटि। हम दूसरों की त्रुटियों को ही देखते रहते हैं! –

***बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।***
***मन जो अपना देखिया, मुझसे बुरा न होय।।***

## इस दुनिया में सब चोर चोर

एक था राजा। अपने राज्य में उसने नियम बना रखा था कि जो कोई चोरी करेगा, उसे फाँसी का दण्ड दिया जायेगा। एक दिन राजप्रासाद में चोरी हो गई। छानबीन हुई। तीन व्यक्ति पकड़े गए। जुर्म प्रमाणित हो गया। तीनों को फाँसी देने की आज्ञा हुई। राजा के व्यक्ति उन्हें फाँसी देने ले गए। दो व्यक्तियों को उन्होंने फाँसी दे दी। तीसरे को देने लगे तो उसने कहा–"ठहरो! फाँसी तो तुम दोगे ही, परन्तु मुझे एक रहस्य ज्ञात है। यह किसी को बता देना चाहता हूँ, जिससे संसार का कल्याण हो।"

लोगों ने पूछा–"क्या रहस्य है?"

उसने कहा–"मैं लोहे से सोना बनाना जानता हूँ।"

राजा के व्यक्तियों ने कहा–"अच्छी बात है। बतला, लोहे से स्वर्ण किस प्रकार बनता है?"

चोर ने कहा–"तुम्हें नहीं, केवल राजा को बता सकता हूँ।"

यह बात राजा के कान में भी पहुँची। उसके मुख में भी पानी भर आया। चोर को बुलाकर उससे पूछा–"क्यों भाई! क्या यह सत्य है कि तू लोहे को सोना बना देता है?"

उस चोर ने कहा–"हाँ महाराज! मैं एक बूटी जानता हूँ। उसे लोहे पर डाल देने से सोना बन जायेगा।"

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

# ऋषि दयानन्द प्रतिपादित राजधर्म

● डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

महर्षि दयानन्द को सर्वदा इस बात का गर्व रहा कि उनका जन्म आर्यावर्त्त देश में हुआ। किन्तु सत्यासत्य और मानव कल्याण की दृष्टि से वे किसी के साथ पक्षपात नहीं करना चाहते। सत्यार्थ–प्रकाश की भूमिका में वे लिखते हैं–

'यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मत–मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे दूसरे देश व मतवालों के साथ भी वर्तता हूँ। जैसे स्वदेशवालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी, तथा सज्जनों को भी वर्तना योग्य है।' (दया. ग्र. माला–भाग 1, पृ. 5, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर 1983 ई.)।

आर्यों से पूर्व इस देश में कोई मनुष्य नहीं बसता था। महर्षि दयानन्द के मतानुसार प्रथम मानव सृष्टि हिमालय की गोदी में हुई, और इस मानव को ही वेदज्ञान मिला और ये आर्य ही धीरे–धीरे सरस्वती और दृषद्वती नदियों से सिंचित प्रदेशों में बस गये।

**आर्यावर्त के प्राचीन गौरव का ह्रास**

महाभारत का समय अत्यन्त अधःपतन का समय बन गया था। महाभारत के युद्ध परस्पर की कलह, द्वेष और दुराग्रह का युग है। श्रीकृष्णजी के सहयोग से भी यह युद्ध टल न सका। तब तो विनाश हुआ है, उससे आज तक भारतवर्ष पनप नहीं पाया। वर्णाश्रम धर्म जो एक सूत्रता के लिए थे, विघटन के कारण बने। मन्दिर बने, अवतार बने, पुजारी और महन्त बने, सम्प्रदाय बने। हम पतित और विघटित होते चले गये। विदेशियों के आक्रमणों ने देश को सभी प्रकार से खण्डित कर डाला। पिछले 1000 वर्षों में बाहर से जो आक्रामक आये वे पैगम्बर धर्म लेकर आये। देश में नयी समस्याएँ उत्पन्न हो गयी, और आर्यावर्त्त देश हर बात में पिछड़ गया। सम्प्रदायवाद ने अनैतिकता की नींव डाली, और देश के लोग व्यापार में, धर्म–कर्म में और शासन में भी एक दूसरे को छलने और ठगने लग गये। महर्षि दयाननद इस युग के इतिहास के प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यावर्त्त की इस दुर्गति को समझने का प्रयास किया, और हमें राष्ट्रीयता का नया आलोक दिया।

**राष्ट्रीय एकता का पतन–**

स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रीय एकता के पतन का कारण तथा विश्लेषण निम्न शब्दों में प्रस्तुत किया है–

(1)"स्वायंभुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गये। क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता। और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत–सा धन, असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है, तब आलस्य, पुरुषार्थ–रहितता, ईर्ष्या–द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या–सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुर्व्यसन बढ़ जाते हैं, जैसे मद्य–मांस सेवन, बाल्यावस्था में विवाह और स्वेच्छाचारादि दोष बढ़ जाते हैं।

और जब युद्ध विभाग में युद्ध विद्या–कौशल और सेना इतनी बढ़े कि जिसका सामना करने वाला भूगोल में दूसरा न हो, तब उन लोगों में पक्षपात अभिमान बढ़कर अन्याय बढ़ जाता है। जब ये दोष हो जाते हैं, तब आपस में विरोध होकर अथवा उनसे अधिक दूसरे छोटे कुलों में से कोई ऐसा समर्थ पुरुष खड़ा होता है कि उनकी पराजय करने में समर्थ होवे। जैसे मुसलमानों की बादशाही के सामने शिवाजी, श्री गोविन्दसिंह जी ने खड़े होकर मुसलमानों के राज्य को छिन्न–भिन्न कर दिया।"

(स. प्र., एका. समु., पृ. 270)

(2)"सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्य कुल में ही हुए थे। अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं। जैसे यहाँ सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वद्घ्रयश्व, अश्वपति, शशबिन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, शर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त और भरत–सार्वभौम सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम मिलते हैं, वेसे स्वायम्भवादि चक्रवर्ती राजाओं के नाम मिलते हैं, वैसे स्वायम्भवादि चक्रवर्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मृति, महाभारतादि ग्रन्थों में लिखे हैं।"

(एका. समु., पृ. 271)

(3)महर्षि दयान्द के निम्न शब्द आज भी हमारे कानों में गूँज रहे हैं–

"विदेशियों का आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना–पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयाशक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, वेद–विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई–भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पाँच सहस्र वर्ष के पहले हुई थी, उनको भी भूल गये? देखो, महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाइयों में सवारियों पर खाते–पीते थे। आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जानें यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःखसागर में डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्र–हत्यारे, स्वदेशविनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करें कि यह राज'–रोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय।"

(स. प्र., दशम समु., पृ. 251)

राष्ट्रीय अखण्डता उस स्थिति में भंग होती है जब राज्यव्यवस्था या प्रशासन शिथिल हो जाता है। राष्ट्र की अखण्डता तो राजा, राज्य, तथा सुशासन की सम्प्रभुता तथा स्वतंत्रता पर ही आधारित होती है। राज्य–शासन में कदाचार तथा सवार्थपरता के आते ही राष्ट्र की एकता और अखण्डता के सामने प्रश्नचिह्न लग जाता है और अन्ततः देश खण्डित हो जात है। अतः राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता को बनाये रखने के लिए राज्य–व्यवस्था का दृढ़, न्यायप्रिय सुनियमित तथा सदाचार–सम्पन्न होना अनिवार्य है। इसी दृष्टि से महर्षि दयानन्द के राजधर्म सम्बन्धी विचार उल्लेखनीय हैं।

**राजा या शासक का निर्वाचन–**

स्वामी दयानन्द राजा का चुना जाना ही प्रशस्त मानते हैं किन्तु कोई दोष न होने पर उसे आजीवन अध्यक्ष बनाये रखने के पक्ष में हैं, किन्तु उन्होंने वंशपरम्परा के आधार पर राजा को दैवी विधान मानने की आलोचना की है। पूना में अपने नवें प्रवचन में वे कहते हैं– "इक्ष्वाकु राजा हुआ तो वह इससे नहीं कि वह श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हुआ था अथवा बलात्कार से राज्य प्राप्त किया हो, किन्तु सारे लोगों ने उसे उसकी योग्यतानुसार सभा में अध्यक्ष स्थान पर बैठाया।" ऋषि ने राजा को अन्न–दाता जैसे सम्बोधन का भी विरोध किया (द्रष्टव्य–आर. एस. पारिख की पुस्तक "Contribution of Arya Samaj in the making of modern India" Page-230) वे उसे "राजा", "सभापति" एवं "अध्यक्ष" कहते हैं। स्वामी दयानन्द यजुर्वेद 8/38 मन्त्र में आये हुए "उपयाम गृहीतः" पद का अर्थ करते है– "राज्य–व्यवहार स्वीकृतः" अर्थात् राज्य–व्यवहार के लिए आप हम से स्वीकृत (निर्वाचित) हैं। 37वें मन्त्र में आये पद "वरुण" का अर्थ उन्होंने उणादिकोष के आधार पर यह किया है– "वृणोति व्रियते वाऽसौ वरुणः" (उणा. 3/13) जिसका वरण किया जाय। इस प्रकार राजा का मनोनयन न करके निर्वाचन करने का प्रावधान है।

**राजा और जनता का सम्बन्ध–**

ऋषि का मत है– "सभापति, तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे।" (स. प्र., छठा समु.) स्वामीजी ने प्रजा और राजा में पिता–पुत्र सम्बन्ध स्थापित करने का निर्देश दिया है– "वर्तत पितृवन्नृषु।" स्वामीजी यजुर्वेद के आठवें अध्याय के 23वें मन्त्र के भावार्थ में लिखते हैं– "राजा व प्रजानन कभी अधर्म कामों को न करें जो किसी प्रकार अपराध के अनुकूल कार्य करे तो प्रजा राजा को, और राजा प्रजा को दण्ड देवे।"

**तीन प्रकार की सभाएँ–**

ऋषि दयानन्द ने वेदों के आधार पर तीन प्रकार की सभाओं का वर्णन किया है– **"त्रीणि राजाना विदधे पुरुणि परि विश्वानि भूषथ संदासि।"** (अथर्व. 3/38/6) प्रजा की सुख–समृद्धि एवं विज्ञान को उन्नति के लिए जिन तीन सभाओं का उल्लेख किय गया है, वे इस प्रकार हैं– (1) विद्यार्य सभा, जो राष्ट्र में शिक्षा का प्रबन्ध करे (शिक्षा विभाग)।(2) धमार्य सभा, जो न्याय विभाग का प्रबन्ध करे (न्यायपालिका)।(3) राजार्य सभा, जो शासन को नियन्त्रित करे (कार्यपालिका)। इससे यह प्रतीत होता है कि स्वामीजी शिक्षा विभाग, न्याय पालिका तथा कार्यपालिका को पृथक्–पृथक् स्वतन्त्र महत्व देना चाहते हैं। 'ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका' में वे लिखते हैं "तीन प्रकार की सभा को ही राजा मानना चाहिये, एक मनुष्य को कभी नहीं।"

**ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से साभार**

# वेदों में पर्यावरण–चेतना

● सूर्या देवी चतुर्वेदा

पर्यावरण (परि+आ+वरण) शब्द के अन्दर व्यक्ति, परिवार, समाज, उसके निवास, ग्राम, नगर, प्रदेश, महाद्वीप अर्थात् सम्पूर्ण सौरमण्डल में होने वाली परिस्थितियाँ, शक्तियाँ हैं और हमारे चारों ओर जो वस्तुएँ हैं, वे आती हैं, जो मानवीय क्रिया–कलापों को तथा अन्याय पदार्थों को प्रभावित करती हैं और उनके अस्तित्व की सीमा बनाती हैं, सुरक्षा करती हैं।

पर्यावरण के इस अर्थ को देने वाले वेदों में परिधि, परिभू, परिवृत् आदि शब्द प्राप्त होते हैं। वेद के परिधि आदि शब्द सुरक्षा रूप प्राकार, परकोटा अर्थों में आये हैं। परमपिता परमात्मा ने जहाँ जीव को जीवन दिया, स्वयं जीव को अपना परिधि बनाया, परमात्मा स्वयं जीव का परिधि बना तथा एक जीव अन्य जीव का परिधि बताया, वहीं उसने जड़ पदार्थों को भी संरक्षण के लिए परिधि रूप से नियुक्त किया है। उन परिधियों में पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्यौः, जल, अग्नि आदि देव, दिशायें, पर्वत, मेघ, वृक्ष, ओषधिवनस्पति, पशु आदि पदार्थ समाहित हैं। इन सभी रक्षक परिधि रूप पदार्थों में परमात्मा का प्रमुख स्थान है, जिससे सभी जीवों की सुरक्षा होती है। मन्त्र कहता है–

**सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः।**
**यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम्।।**

अथर्व. 8.2.25

अर्थात् ब्रह्म परमात्मा एक ऐसा आवरण है, धारक है, परिधान है, जिसको प्राप्त कर सभी सुख प्राप्त करते हैं।

अथर्ववेद में जल, वायु और ओषधियों को छन्दस्=आच्छादक बताया है –

**त्रीणि च्छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्।**
**आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन्भुवन आर्पितानि।।**

अथर्व. 18.1.17

प्रकृत मन्त्र में जल, वायु और ओषधियों को छान्दस पर्यावरण निर्दिष्ट किया है। ये तीनों ही तत्त्व जीवन के अस्तित्व को सुरक्षित रखते हैं। अन्यत्र जल, वायु तथा ओषधियों को परिधि, परिभू शब्दों से आच्छादक वर्णित किया है।

पृथिवी भी ब्रह्माण्ड में परिधि है, जो सभी जीव जन्तुओं, पदार्थों की आच्छादक है, परकोटा है–

**उर्वीरासन् परिधयो वेदिर्भूमिरकल्पत।**
**तत्रैतावग्नी आधत्त हिमं घ्रंसं च रोहितः।।**

अथर्व. 13.1.46

अर्थात् पृथिवी जगत् की पर्यावरण रूप परिधि है, जिसमें सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश आता है एवं यागादि सम्पन्न होते हैं। यह पृथिवी परिधि रूप होती हुई, संरक्षण कैसे करती है, घेरा कैसे बनती है, इसे अथर्ववेद के निम्न मन्त्र में स्पष्ट किया है–

**यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।**
**यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।।**

अथर्व. 12.1.3

मन्त्र द्वारा स्पष्ट है कि पृथिवी जल, अन्न आदि की सम्पदाएँ देकर हमें जीवन प्रदान करती है, वह हमारी परिधि है, रक्षिका है।

यजुर्वेद में पृथिवी को तथा ओषधि, द्यौः एवं अन्तरिक्ष आदि को अमृत–प्रदाता बताया है–

**पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।**
**पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।**

यजु. 18.36

मन्त्र में कामना की गई है कि पृथिवी, ओषधियाँ, द्यौलोक तथा अन्तरिक्ष लोक और दिशाएँ ये सभी अमृतरूप पयः देने वाले हैं, रस से संरक्षण करने वाले हैं, वे सभी हमें रस को प्राप्त करावें।

इस प्रकार वेदों में पर्यावरण = सुरक्षा देने वाले बहुत से तत्त्व हैं, जो परमपिता परमात्मा की महती देन है। इन संरक्षणों से मनुष्य तभी तक लाभ प्राप्त कर पाता है, जब उनका उचित उपयोग करता है। इन सुखदायी तत्त्वों के रहते हुए भी मनुष्य क्यों दुःखी है, और ये तत्त्व क्यों नहीं सुख दे पा रहे हैं, इसे ऋग्वेद की निम्न ऋचा व्यक्त कर रही है–

**प्रिया तष्टानि मे कपिर्व्यक्ता व्यदूदुषत्।**
**शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।।**

ऋ. 10.86.5

मन्त्र से स्पष्ट हो रहा है कि जब मनुष्य प्राकृतिक पृथिवी, जल, वायु आदि पदार्थों का विलासिता के कारण, भोगातुर होकर अन्धाधुन्ध दोहन करता है, तो इन प्राकृतिक पदार्थों में विकृति पैदा होती है और वे दूषित हो जाते हैं, पुनः हमें सुख के स्थान पर दुःख प्राप्त होता है। दुःख प्राप्त होना ही प्रकृति द्वारा जीव का सिर काट डालना है, जीव का सिर झुका देना है।

मनुष्य द्वारा किए जाने वाले कई प्रदूषण हैं, जिनमें भूमि–प्रदूषण, जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण एवं ध्वनि–प्रदूषण मुख्य हैं।

**1. भूमि–प्रदूषण –** वेदों में जिस पृथिवी को परिधि बताया है, उस विभिन्न नामों वाली रत्नगर्भा, आनन्ददा, आश्रयदा, पृथिवी को उर्वरक बनाने के लिए गोबर का निर्देश किया है–

**करीषिणीं फलवतीं स्वधामिरां च नो गृहे।**
**औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु मे।।**

अथर्व. 19.31.3

मन्त्र में बहुत ही स्पष्ट रूप से कथन है कि भूमि करीष = गोबर के द्वारा अत्यन्त फल, अन्न आदि वाली बनती है।

पर आज मनुष्य अत्यधिक आवश्यकताओं के बढ़ने के कारण भूमि से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने की चेष्टा से रासायनिक खादों का प्रयोग करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति न्यून हो जाती है। इसका परिणाम होता है, प्रतिवर्ष उन खादों का परिणाम बढ़ाया जाता है, पुनः भूमि की शक्ति नष्ट होने पर कृषि में विभिन्न रोग लगते हैं, कृमि पैदा होते हैं। जिनके निवारण के लिए रासायनिक दवाओं का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार ऐसी प्रदूषित भूमि से उत्पन्न अन्न, अनेक संग्रहणी, अल्सर, नाना चर्म रोग, नेत्र रोग, मस्तिष्क शिथिलता आदि बीमारियों को उत्पन्न करता है और रासायनिक दवाओं से युक्त भूमि के धूलिकण भी बीमारियों के सहयोगी बनते हैं।

**2. जल प्रदूषण–** जीवन की अनिवार्यताओं में जल भी एक महत्त्वपूर्ण घटक है, इसके बिना जीवन सम्भव नहीं है। लौकिक कोष अमरकोषादि में भी कमलम्, जलम्, जीवनम्, पानीयम् आदि जल के नाम अंकित हैं। विभिन्न नामों वाला जल औषध रूप है–

**आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः।**
**आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात्।।**

अथर्व. 3.7.5

अर्थात् जल समस्त दुःखों, रोगों को नष्ट करने वाला है, यह सर्वोत्तम वैद्यरूप तत्त्व है। खेती आदि में जल के सुप्रयोग से, पान और स्नानादि में इसका प्रयोग कर दरिद्रता आदि रोगों का नाश करना चाहिए। अन्यत्र जल को मातृ रूप संरक्षण देने वाला प्रतिपादित किया है–

**आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।**
**विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि।।**

ऋ. 10.17.10

अर्थात् जल अत्यन्त कल्याण कारक हैं, जैसे माता पुत्र का कल्याण करती है, वैसे जल कल्याण करते हैं, इन जलों को प्राप्त कर जीवन प्रोन्नत हो जाता है। इस प्रकार जल अमृत रूप है, जीवनी शक्ति है, सब ओषधियों का रस है। अतः जल के संरक्षण के लिए वेद में निर्देश दिया गया–

**माऽपो मौषधीर्हिंसीः।**

यजु. 6.22

खेद है कि विश्व का पालन–पोषण करने वाले जल को आज दूषित किया जा रहा है। कल–कारखानों के गन्दे जल को नदियों में बहाया जा रहा है, सीवर आदि के दूषित जल को भी तालाब, नदी आदि में छोड़ा जा रहा है। कृषि में जो रासायनिक दवाओं, खादों का प्रयोग होता है, उन खेतों से वर्षा का जल दूषित होता हुआ बहकर मार्गों में तथा नदी, तालाबों में एकत्रित होता है, इन सबके कारण फाइलेरिया, मलेरिया, टाइफाइड, पक्षाघात आदि रोग बढ़ रहे हैं। उन मलिन जलों को पीकर पशु भी रोग–ग्रस्त हो रहे हैं और उनका दूध भी संक्रामक रोगों का कारण बनता जा रहा है।

**3. वायु–प्रदूषण –** वायु सृष्टि का प्राणाधार है, मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष आदि जड़–चेतन जगत् का जीवन स्रोत है। यह पृथिवी, जल आदि की अपेक्षा सूक्ष्म होने से अति शक्तिशाली है। इसी के द्वारा सबकी प्रतिष्ठा है, सभी रक्षित हैं। यह रोगादि दोषों को बाहर करता है–

**आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः।**
**त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे।।**

अथर्व. 4.13.3

अर्थात् वायु सबसे बड़ी औषध है, वह समस्त रोगों को बहाकर दूर ले जाता है। वेदों में तथा वैदिक वाङ्मय में इसके अनेक भेद बताये हैं। वायु के दूषित हो जाने पर समस्त पदार्थों की जीवनी शक्ति नष्ट हो जाती है, दूषित वायु के सेवन से नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं, फेफड़े, फुफ्फुस आदि विकृत हो जाते हैं।

वायु–दूषण का प्रभाव पृथिवी आदि के प्रदूषणों की अपेक्षा गहरा होता है। मनुष्य के स्वास्थ्य के साथ–साथ पेड़–पौधे अन्य जीव–जन्तु भी प्रभावित होते हैं, सभी की जीवनी शक्ति, कार्यशक्ति घट जाती है। मनुष्यों में जहाँ दमा, निमोनिया, कास आदि रोग होते हैं, वहीं पत्तों पर धूम्र आदि जमने से वृक्षों की वाष्पोत्सर्जन क्रिया न्यून हो जाती है, जिससे जन–जीवन द्वारा उच्छ्वसित दूषित वायु को वृक्ष शुद्ध नहीं कर पाते।

इतना ही नहीं इस प्रदूषित वायु का प्रभाव 'ओजोन' परत पर भी पड़ता है, जिससे पृथिवी पर तापमान की वृद्धि हो जाती है।

विज्ञान की परिभाषा में भूमि से 35–40 कि.मी. की ऊँचाई पर गैस रूपी परत का आवरण 'ओजोन' गैस कहा जाता है। इस ओजोन के स्वरूप को बताने के लिए हिन्दी में कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है, न ही इसके अर्थ को स्पष्ट करने वाला कोई अन्य शब्द है। पर वेदों में पृथिवी की रक्षक ओजोन परत के लिए 'उल्ब' शब्द प्रयुक्त है–

**महत् तदुल्बं स्थविरं तदासीद्येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः।**
**विश्वा अपश्यद् बहुधा ते अग्ने जातवेदस्तन्वो देव एकः।।**

ऋग्. 10.52.1

यह वेदोक्त 'उल्ब' परत जो आधुनिक काल में ओजोन नाम से प्रसिद्ध है, वह सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों का 99 प्रतिशत अवशोषण करके गरम परत का निर्माण करती हैं और पृथिवी की वनस्पतियों व जीव–जन्तुओं को भस्म होने से बचाती हैं। पर वायुमण्डल के दूषित होने पर, उसमें वर्तमान दूषित क्लोरो, फ्लोरो एवं कार्बन डाई आक्साइड गैसों से जब ओजोन परत में विकृति आ जाती है, जिससे वायुमण्डल का सन्तुलन बिगड़ जाता है। तापमान की वृद्धि आदि से विनाशक स्थिति वाला वातावरण बन जाता है, जिससे चर्मरोग, गलित कुष्ठ, कैंसर आदि रोग उत्पन्न होने लगते हैं।

दूषित वायुमण्डल का अम्लीय वर्षा (ओला, हिमपात आदि), ऋतु–परिवर्तन आदि का भी संकट उत्पन्न हो जाता है, जिससे

वनस्पतियों, जलों तथा मानवों पर कुप्रभाव पड़ता है।

**4. ध्वनि–प्रदूषण** – ध्वनि मानव जीवन के पारस्परिक व्यवहार की संवाहिका है, इसके अभाव में मानव एक दूसरे से बहुत दूर हो जाता है। मानव के सदृश अन्य जीव–जन्तु भी ध्वनि के माध्यम से पारस्परिक वेगों–संवेगों, आन्तरिक भावों की प्रस्तुति करते हैं। यह ध्वनि शब्द रूप है, जो ज्ञान तथा विद्या की सेतु है। वेदों में ध्वनि के महत्त्व को बताते हुए कहा है–

**अन्तरेमे नभसी घोषो अस्तु पृथक् ते ध्वनयो यन्तु शीभम्।**
**अभि क्रन्द स्तनयोत्पिपानः श्लोककृन्मित्रतूर्याय स्वर्धी।।**

अथर्व. 5.20.7

अर्थात् ध्वनि शब्द संग्राहक शक्ति का संकेत कर रहा है, क्योंकि ध्वनिरूप शब्द के द्वारा ही किसी को समीप लाया जा सकता है, कथन किया जा सकता है तथा शत्रुओं को भी दूर किया जा सकता है। ध्वनि सम्बन्ध–स्थापन करने का सशक्त शस्त्र है। पाशविक ध्वनियाँ भी परस्पर पशुओं को एक दूसरे से जोड़ती हैं।

ये जैविक ध्वनियाँ जहाँ व्यावहारिक सम्बन्ध सम्पन्न करती हैं, वहीं लाउडस्पीकर, मोटर, मशीन आदि की यान्त्रिक ध्वनियाँ उन सम्बन्धों में ह्रास लाती हैं। यान्त्रिकीय ध्वनियों से अनिद्रा, शिरोवेदना, बधिरता, स्नायु दौर्बल्य, अस्थमा आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

नियामक परमपिता परमात्मा ने जिस प्रकार सुख–समृद्धि के लिए भूमि, जलवायु आदि पदार्थ बनाये हैं, उसी प्रकार इन पदार्थों में गड़बड़ी आने पर इनको शुद्ध परिष्कृत करने के लिए दयालु परमात्मा ने सूर्य, अग्नि, यज्ञ, ओषधि, पर्वत, पशु, मन आदि पदार्थ भी नियुक्त किए हैं, जिनके द्वारा दूषण हटाकर पृथिवी, जल वायु आदि को पुनः भूषण बनाया जा सकता है। वेदों में प्रदूषितता को रक्षस्, वृत्र, असुर, यातुधान, कृमि, मृत्यु, विष, अघ, अत्रि आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

### प्रदूषण निवारक पदार्थ

**सूर्य–** बहुशः मंत्रों में सूर्य के दूषण–निवारक गुण का वर्णन है। सूर्य की बाल रश्मियाँ जीवों के समस्त रोगों को दूर करती हैं और प्रखर रश्मियाँ पृथिवी, जल आदि के प्रदूषण को हटाती हैं।

**उत् सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वन्।**
**आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा।।**

अथर्व. 6.52.1

मंत्र से सुस्पष्ट है कि सूर्य दृष्ट–अदृष्ट समस्त पर्यावरण–रक्षक तत्त्वों के प्रदूषण को नष्ट करने का महौषध है।

अपि च –

**सूर्ये विषमा सजामि।**

ऋग् 1.191.10

**सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।**

यजु. 4.4

**अग्नि–** निम्न मन्त्रों में अग्नि को पर्यावरण शुद्धि का महत्त्वपूर्ण साधन बताया है। वेदों में अग्नि का बहुल वर्णन है। यह अग्नि समस्त प्रकार के दोषों को, अशुद्धियों को नष्ट करता है। अग्नि के वन्य, सामुद्रीय, यज्ञीय, गार्हस्थ्य तथा जाठर आदि कई भेद हैं, वे सभी अग्नियाँ तत्–तत् पदार्थों के दोषों की नाशक हैं।

**अग्ने हंसि न्यमित्रणं दीद्यन्मर्त्येष्वा।**
**स्वे क्षये शुचिव्रत।।**

ऋग्. 10.118.1

**अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः।**
**शुचिः पावक ईड्यः।।**

अथर्व. 8.3.26

**यज्ञ** – समस्त पर्यावरण शोधकों में यज्ञ का प्रमुख स्थान है। यह भूमि, जल, वायु, ध्वनि और मनुष्यादि जीवों के प्रदूषणों को दूर करने में पूर्ण सक्षम है। यज्ञ में डाला हुआ घृत, समिधाएँ तथा सुगन्धित, मिष्ट, पुष्टिकारक एवं रोगनाशक डाले हुए कस्तूरी आदि पदार्थ भूमिदोष, वायुदोष और मेघादि निर्माण में सहायक होकर जल–दोष एवं प्राणियों के शारीरिक दोषों को दूर करता है। यज्ञ में सस्वर मन्त्रपाठ ध्वनि–दोष के प्रदूषण को दूर करता है। यज्ञ अनेकानेक दोषों से मुक्त कराकर सद्बुद्धि, सद्विचार, कान्ति, शान्ति और नीरोगता प्रदान करता है।

यज्ञ की इस महत्ता के कारण यजुर्वेद के 18वें अध्याय में **'मे यज्ञेन कल्पन्ताम्'** इस टेक के द्वारा सम्पूर्ण सुखों की, पदार्थों की, सम्पत्ति की याचना की गई है, तथा आयुः, प्राण, चक्षुः, श्रोत्र, वाक्, मन, आत्मा, ब्रह्म, ज्योति, सुख, धर्म तथा जिज्ञासा आदि को यज्ञ के द्वारा ही प्राप्त करने की 21वें मन्त्र में अभिलाषा प्रकट की है। यज्ञ में डाले हुए पदार्थ सूक्ष्म हो जाते हैं और सूक्ष्म होकर सभी प्रदूषणों को नष्ट कर स्वस्थता प्रदान करते हैं। यज्ञ सर्वरक्षक होने अध्वर तथा दोषरहित होने से 'मख' कहा जाता है। यह दोषों को नदी के समान बहा ले जाता है–

**इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा वहत्।**
**य इदं स्त्री पुमानकरिह स स्तुवतां जनः।।**

अथर्व. 1.8.1

मन्त्र से सुस्पष्ट हो रहा है कि यज्ञ में डाली हुई हवि समस्त दूषणरूप राक्षसों को दूर करने वाली है। अतएव यज्ञ को सम्पूर्ण भुवन की नाभिः केन्द्र कहा है।

**ओजोन रक्षक यज्ञ** – पृथिवीस्थ ताप वृद्धि को देखते हुए वैज्ञानिकों द्वारा पृथिवी के रक्षक आवरण रूप ओजोन परत में छिद्र माना जा रहा है। उस छिद्र से होने वाले संकट का अनुमान कर सम्पूर्ण विश्व चिन्तित है तथा छिद्र को भरने के लिए वैज्ञानिक अन्वेषणरत हैं। लेकिन परमपिता परमात्मा ने इस 'ओजोन' को जो वेद की भाषा में 'उल्ब' कहा जाता है, उसे सुरक्षित करने के लिए, उसके दोषों, विकारों को दूर करने के लिए पहले से ही उपाय बताया हुआ है–

**आपो वत्सं जनयन्तीर्गर्भमग्रे समैरयन्।**
**तस्योत जायमानस्योल्ब आसीद्धिरण्ययः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अथर्व. 4.2.8

मंत्र में बड़े ही सुस्पष्ट शब्दों में कहा है कि इस दृश्य जगत् के ऊपर उल्ब (झिल्ली)=ओजोन ढकी हुई है, जो सुखदायक है, उसकी रक्षा हवि से, यज्ञ कर्म से करनी चाहिए।

**ओषधि** – ओषधियाँ भी प्रदूषण को नष्ट करती हैं, ओषधियों के द्वारा ही मनुष्य को प्राण = आक्सीजन प्राप्त होता है, नीरोगता प्राप्त होती है–

**उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा उग्रा या विषदूषणीः।**
**अथो बलासनाशनीः कृत्यादूषणीश्च यास्ता इहा यन्त्वोषधीः।।**

अथर्व. 8.7.10

मन्त्र स्पष्ट कर रहा है कि ओषधियाँ सब दोषों को नष्ट करने वाली हैं। अतः पर्यावरण को बनाने के लिए उनका सेवन आवश्यक है। इन संरक्षक ओषधियों के संरक्षण, संवर्धन के वेदों में बहुत से निर्देश हैं–

**पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा हिंसिषम्।**

यजु. 1.25

**मा काकम्बीरमुद् वृहो वनस्पतिमशस्तीर्वि हि नीनशः।**

ऋ. 6.48.17

मन्त्रों में सबके आश्रयभूत वृक्षों को नष्ट न करने का आदेश दिया गया है।

**पर्वत** – पर्वतों का भी पर्यावरण को दोषमुक्त रखने में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे जहाँ भूमि की सुरक्षा करते हैं, वर्षा कराने में सहायक बनते हैं, वहीं वे पर्वत शुद्ध वायु, पवित्र नदियाँ, जीवनदायिनी ओषधियाँ तथा बहुमूल्य खनिज पदार्थ देकर मानवीय जीवन को सुखमय बनाते हैं, सभी प्रकार के दोषों को, अभावों को दूर करते हैं। मृत्यु रूप राक्षस प्रदूषण से बचाते हैं–

**इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।**
**शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन।।**

ऋ. 10.18.4

पशु – पर्यावरण को यथास्थित रखने में, सुखमय बनाने में पशु–पक्षी भी अत्यन्त सहायक हैं। इनके द्वारा मनुष्य सुखमय बनते हैं, इनके सान्निध्य से भूमि, वायु आदि के दोष दूर होते हैं। ये पशु पार्थिव, दिव्य, आरण्य आदि कई भेदों वाले हैं। इन पशुओं के संरक्षण से पर्यावरण सुरक्षित रहता है–

**सं सं स्रवन्तु पशवः समश्वाः समु पुरुषाः।**
**सं धान्यस्य या स्फातिः संस्राव्येण हविषा जुहोमि।।**

अथर्व. 2.26.3

तात्पर्य है समस्त पशु तथा समस्त मानव मिलकर रहें। पशु मानव के कल्याण के लिए हैं, उन्हें हिंसित या पीड़ित न करें और जो धन–धान्य की मनुष्य के समीप सम्वृद्धि है, उसे भी मिलकर उपभोग करें, क्योंकि सम्वृद्धि की प्राप्ति उपयोगिता संगतिकरण में है। जब पशु–पक्षी मिलकर रहते हैं, मिलकर धन–धान्य का उपभोग करते हैं तभी पुष्टि मिलती है। इसलिए वेदों में पशुओं के संरक्षण के बहुशः कथन है–

**पशून् पाहि।**

यजु. 1.1

अर्थात् पशुओं की रक्षा करों।

**मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः।**

अथर्व. 11.2.1

ये पशु मलिनता को दूर कर स्वच्छ वातावरण प्रदान करते हैं। इनकी हिंसा होने पर, इनकी चीत्कारें मृत्यु के मुँह में धकेलती हैं, और दैविक प्रकोपों को उत्पन्न करती हैं। ओजोन परत को भी हानि पहुँचाती हैं। अतः पशु–पक्षियों की सुरक्षा पर्यावरण के निर्माण में अत्यन्त आवश्यक है।

मन – पर्यावरण को उत्तम बनाने में मन की अहं भूमिका है। मन के द्वारा ही अच्छी–बुरी, खरी–खोटी परिस्थिति बनती है। एक ही समय में भिन्न–भिन्न व्यक्तियों द्वारा, भिन्न–भिन्न व्यवहार होते हैं, उन सबका मूल कारण मन ही है। यदि मन शुद्ध पवित्र है, सत्य से युक्त है और वश में है, तो दुःख की जगह सुख उत्पन्न हो जाता है, और यदि मन मलिन है, दुरितभावों से युक्त है व निर्वश है, तो सुख की जगह दुःख ले लेता है। हिंसा, प्रतिशोध, चोरी, डकैती, छीना, झपटी सब कुछ मन ही करता है। प्रकृति का दोहन भी यह मन ही करता है। मन के दूषित भावों के तरंगों से वायु दूषित हो जाता है और मानसिक रोग उत्पन्न होने लगते हैं। तनाव, बुद्धिहीनता, विस्मृति एवं रक्तचाप इत्यादि रोगों की वृद्धि हो जाती है।

तात्पर्य यह हुआ कि पर्यावरण को दूषित करने में मन ही अग्रणी बनता है, अतएव यजुर्वेद के 35वें अध्याय के प्रारम्भिक 6 मन्त्रों में मन को 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' यजु. 34.1–6, अर्थात् मेरा मन शिव संकल्प वाला होवे, इस टेक के द्वारा कल्याणकारी मन बनाने की परमात्मा से याचना की गई है।

जीते हुए व्यक्ति का मन भद्र चाहने वाला बने, इस तथ्य को मन्त्र में प्रकट किया गया है–

**भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम्।**
**भद्रं वैवस्वते चक्षुर्बहुत्रा जीवतो मनः।।**

ऋ. 10.164.2

भद्र चाहने वाले मनुष्य को सर्वदा अपने से इतर जीव–जन्तुओं पर अपनी शुभ दृष्टि रखनी चाहिए, जिससे समस्त पर्यावरण उत्तम रहे।

इस प्रकार वेदों में इन पर्यावरण–रक्षक तत्त्वों, घेरों की तथा पर्यावरण–संरक्षण की पुष्कल ज्ञानराशि प्रतिपादित है, पर्याप्त चेतनाएँ उपलब्ध हैं। पर्यावरण को सुखमय, जीवन्त, दोषमुक्त बनाने में अत्यन्त सहायक सूर्य, अग्नि, ओषधि आदि जो पदार्थ हैं, उनकी महत्ता वेदों में बार–बार गाई गई है। वेदों से उन पदार्थों के गुण कर्म को समझते हुए पर्यावरण का संरक्षण एवं सन्तुलन बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

**पाणिनि कन्या महाविद्यालय,**
**वाराणसी–10**

# पं. गंगाप्रसाद जज रचित 'फाउण्टेन हैड ऑफ रिलीजन'

● डॉ. भवानी लाल भारतीय

संसार के प्रचलित प्रमुख धर्मों (सही अर्थ में मतों, मज़हबो) का आदि मूल वेदनिरूपित धर्म है, इस सार्वभौम तथ्य को सत्य सिद्ध करने का प्रयास पं. गंगाप्रसाद जज ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'फाउण्टेन हैड ऑफ रिलीजन' में किया। वैदिक धर्म के पश्चाद्वर्ती बौद्ध, पारसी, यहूदी, इसाई तथा इस्लाम इन पाँच मतों के ग्रन्थों का तुलनात्मक अध्ययन कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कालक्रम की दृष्टि से वेदप्रतिपादित धर्म संसार का प्राचीनतम धर्म है, कालान्तर में पृथ्वी पर फैले उपर्युक्त बौद्धादि पाँचों मतों की मूल शिक्षाएँ किसी न किसी रूप में वेदों से निकली हैं। गंगाप्रसाद जज (1871–1966) मूलतः मेरठ के रहने वाले थे। 1893 में एम.ए. करने के पश्चात् वे संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) की प्रशासनिक सेवा में रहे। पश्चात् 1922 से 1931 तक टिहरी राज्य में मुख्य न्यायाधीश के पद कर कार्य किया। वे सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे तथा परोपकारिणी सभा के सदस्य के रूप में महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा की प्रवृत्तियों में रुचि लेते रहे। 13 जनवरी, 1966 को जयपुर में उनका निधन हुआ। फाउण्टेन हैड ऑफ रिलीजन का प्रथम संस्करण 1909 में ट्रैक्ट विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा, सुंयक्त प्रान्त से प्रकाशित हुआ। इससे पहले यह ग्रन्थ धारावाहिक रूप से 'वैदिक मैगज़ीन एण्ड गुरुकुल समाचार' में छपा। इन पंक्तियों के लेखक के संग्रह में (1907 ई.) की उक्त पत्र की फाइल है। श्रावण, भाद्रपद 1964 वि. के अंकों में इस ग्रन्थ का पाँचवाँ अध्याय छपा है। इस अध्याय में पारसी मत का मूल वैदिक धर्म सिद्ध किया गया है।

यह पुस्तक छपने के साथ लोकप्रियता की सारी सीमाओं को पार कर गई। इसके दो अन्य संस्करण 1911 तथा 1916 में छपे। आर्य समाज मद्रास ने इसे 1941 में प्रकाशित किया। लेखक के परम मित्र मेरठ निवासी पं. घासीराम ने इसका उर्दू अनुवाद सर चश्मे मज़ाहिब शीर्षक से किया जो संयुक्त प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा से 1919 में छपा। इसी सभा ने हिन्दी अनुवाद के लिए पं. हरिशंकर शर्मा से निवेदन किया और 1917 में यह ग्रन्थ धर्म का आदि स्रोत शीर्षक से छपा। आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर ने भी इस प्रकाशित किया है। परिचयात्मक भूमिका तथा उपसंहार (निष्कर्ष) सहित यह ग्रन्थ पाँच अध्यायों तथा अनेक उपविभागों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में लेखक की स्थापना है कि मुसलमानी मत का आधार विशेषतः यहूदी मत है। इस अध्याय में कुरान के मि. सेल (SALE) कृत अंग्रेज़ी अनुवाद को अपने विवेचन का मुख्य आधार बनाया गया है।

द्वितीय अध्याय में लेखक की प्रतिज्ञा है–ईसाई मत का आधार विशेषतः यहूदी मत और अंशतः बौद्धमत है। ईसाइयत पर बौद्धमत के मुख्य प्रभाव को सिद्ध करने के लिए लेखक ने प्रसिद्ध इतिहासकार रमेशचन्द्र दत्त के ग्रन्थ प्राचीन भारतीय सभ्यता (Ancient Indian Civilsation) से सहायता ली है। यह एक सर्वस्वीकृत मत है कि यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम–ये तीन मत सैमेटिक मज़हब कहलाते हैं जिनमें एक एक इल्हामी किताब, पैग़म्बर की अवधारणा तथा व्यक्तिगत ईश्वर (Presonified God) की मान्यता को स्वीकार किया गया है। लेखक ने बुद्ध और ईसा के वचनों को तुलनात्मक शैली में प्रस्तुत कर बताया है कि ईसाइयत की अधिकांश नैतिक शिक्षाएँ बौद्धधर्म के ग्रन्थ धम्म पद में उल्लिखित शिक्षाओं से मिलती हैं।

तीसरे अध्याय में बौद्ध मत का आधार वैदिक मत सिद्ध किया गया है। लेखक ने ऐतिहासिक प्रमाणों से बताया कि बौद्ध मत एक स्वतन्त्र मत का रूप क्यों ले सका जबकि इस मत की अधिकांश नैतिक मान्यताएँ वैदिक धर्म के अनुकूल हैं। यह दूसरी बात है कि वेदों के प्रामाण्य तथा कतिपय दार्शनिक सिद्धान्तों में बौद्ध और वैदिक मत के पार्थक्य को स्पष्ट रूप में देख जा सकता है। प्रचलित सनातन धर्म की यह खूबी है कि उसने विद्रोह के तेवर को अपनाने वाले गौतम बुद्ध को विष्णु का नवाँ अवतार घोषित कर इस विचारधारा के क्रान्तिकारी रूप का शमन कर दिया। ग्रन्थ का चौथा अध्याय सिद्ध करता है कि यहूदी मत (Judaism) का आधार पारसी (जरदुश्ती मत) धर्म है। ईश्वर और शैतान इन दो बराबर ताकत रखने वाली शक्तियों की अवधारणा सर्वप्रथम हमें पारसी मत में दिखाई पड़ती है। यहाँ अहुरमज़्दा (यहूदी मत का येहोवा) ईश्वर है और अंगिरामन्यु शैतान का प्रतीक है। भगवदीय तत्त्व (Divine Spirit) तथा आसुरी तत्व (Satanic Spirit) का द्वैत, द्वन्द्व तथा शत्रुवत् भाव जरदुश्ती धर्म में प्रचलित हुआ। पारसी मत की विवेचना के लिए लेखक ने इस मत के मान्य ग्रन्थ जेंदावेस्ता तथा मार्टिन हॉग के पारसी मत विषयक निबन्धों का आधार लिया। पाँचवाँ और अन्तिम अध्याय जहाँ कलेवर में बड़ा है वहाँ इस तथ्य को रेखांकित करता है कि जरदुश्ती मत की अधिकांश मान्यताएँ वैदिक धर्म की मान्यताओं के समान हैं। प्रथम लेखक ने संस्कृत और ज़ेंद (Zend) भाषा की तुलना कर दोनों में समानता को तलाशा। तत्पश्चात् धर्म और दर्शन विषयक दोनों मतों की धारणाओं की विस्तार से तुलना कर सिद्ध किया कि काल की दृष्टि से वैदिक धर्म प्राचीन है तथा पारसी मत की अधिकांश मान्यताएँ वैदिक मान्यताओं से पर्याप्त समानता रखती हैं।

'धर्म का आदि स्रोत' आर्य समाज के क्षेत्र में पर्याप्त चर्चित हुआ। विभिन्न पत्रों में उसकी समीक्षाएँ छपीं तथा उसका पाठक वर्ग बढ़ता गया। अन्य मतावलम्बियों ने इस पुस्तक से अपनी असहमति व्यक्त करने में पत्र–पत्रिकाओं का सहारा लिया। इलाहाबाद से निकलने वाले मुस्लिम रिव्यू नामक पत्र में एक लेखक ने एक सत्य प्रेमी (A Lover of Truth) नाम से इस ग्रंथ की आलोचना में एक लेखमाला प्रकाशित की। लेखमाला का शीर्षक था फाउन्टेन हैड ऑफ रिलीजन Thoughts on the Fountain Head of Religion. पर विचार इसकी प्रथम किस्त में लेखक ने सामी मज़हबों की इस धारणा को सत्य सिद्ध किया कि सृष्टि की उत्पत्ति अभाव से हुई है। यह लिखकर उसने संसार के उपादान कारण प्रकृति की अनादिता को अस्वीकार किया। मुस्लिम रिव्यू के अप्रैल 1911 के अंक में इसी लेखक ने प्रकृति की अनादिता को पुनः चुनौती दी और कहा कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा के समानान्तर अनादि प्रकृति की स्वतन्त्र सत्ता को कैसे माना जा सकता है? वैदिक मैगज़ीन में पं. गंगाप्रसाद ने मुस्लिम रिव्यू के आक्षेपों का धारावाहिक उत्तर दिया। फलतः कार्तिक 1968 वि. (1911) में अंक में 'सृष्टि उत्पत्ति का सिद्धान्त' तथा इससे पहले के आश्विन 1968 वि. के अंक में क्या सृष्टि की रचना अभाव (Nothing) से हुई है? लेख छपे। अन्तिम लेख मार्गशीर्ष 1968 वि. (1911) के अंक में दि फाउण्टेन हैड ऑफ रिलीजनः ए विण्डिकेशन शीर्षक से छपा। इस प्रकार इस्लाम के प्रवक्ता द्वारा किए गए आक्षेपों का सप्रमाण समाधान स्वयं लेखक ने किया।

आलोच्य ग्रन्थ की ओर ईसाई मतानुयायियों का भी ध्यान गया। कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले एपिफेनी (Epiphany) नामक ईसाई पत्र ने 2 अप्रैल, 1910 के अंक में इस पर गम्भीर आलोचना लिखी। पारसियों ने भी इस ग्रन्थ की चर्चा अपने पत्रों–जामे जमशेद (बम्बई) तथा साँझ वर्तमान (दोनों दैनिक) के 1 सितम्बर, 1910 के अंकों में की। भारत के अतिरिक्त यह ग्रन्थ यूरोप, अमेरिका तथा अफ्रीका में भी पढ़ा गया। मुस्लिम रिव्यू में छपे लेखों के लेखक मौलवी अबू अब्दुल्ला मुहम्मद ज़काउल्ला खाँ एम.ए. थे, यह तथ्य लेखक ने इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद की भूमिका में उजागर किया तथा यह बताया कि ईसाई पत्र इण्डियन विटनेस ने उसकी आलोचना में जो लिखा उसका उत्तर खुद लेखक ने मूल ग्रन्थ (अंग्रेज़ी) के तीसरे संस्करण में दिया था। खेद है कि तुलनात्मक धर्म विषयक इस कालजयी ग्रन्थ और उसके लेखक के बारे में आर्य समाज की वर्तमान पीढ़ी लगभग अपरिचित है।

**आर्य समाज के कालजयी ग्रन्थ से साभार**

## आर्य जगत् के पाठकों हेतु सूचना

आर्य जगत् के पाठकों को सूचित किया जाता है कि आर्य जगत् साप्ताहिक पत्रिका 22 अप्रैल 2018 का अंक महात्मा हंसराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इस लिए 8 अप्रैल, 15 अप्रैल एवं 29 अप्रैल 2018 के अंक बन्द रहेंगे।

**सम्पादक**

# गुरुत्वाकर्षण

● शिवनारायण उपाध्याय

**आ यं गौः पृश्निः क्रमीद सदन् मातरं पुरः।**
**पितर च प्रयन्त्स्व।**

**यजुर्वेद अध्याय 3 मंत्र 6 अथर्व 6.31.1**

(अयम्) यह प्रत्यक्ष (गौः) गोलरूपी पृथिवी (पितरम्) पालन करने वाले (स्वः) सूर्य लोक के (पुरः) आगे आगे (असदत्) चलती है वा (मातरम्) अपनी योनिरूप जलों के साथ सह वर्तमान (प्रयन्) अच्छी प्रकार चलती हुई (पृश्निः) आकाश में (आक्रमीत्) चारों तरफ घूमती है।

भावार्थ– मनुष्यों को जानना चाहिए कि जिससे यह भूगोल पृथिवी जल और अग्नि के निमित्त से उत्पन्न हुई अन्तरिक्ष वा अपनी कक्षा अर्थात् योनि रूप जल के सहित आकर्षण रूपी गुणों से सबकी रक्षा करने वाले सूर्य के चारों तरफ क्षण क्षण घूमती है। इसी से दिन–रात, शुक्ल वा कृष्ण पक्ष, ऋतु व अयन आदि काल विभाग क्रम से सम्भव होते हैं।

**आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो**
**निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
**हिरण्येन सविता रथेना देवा याति**
**भुवनानि पश्यन्।**
**यजुर्वेद अध्याय 33 मंत्र 43।**

ऋ. 1.35.2

हे मनुष्यो। जो ज्योतिः स्वरूप रमणीय स्वरूप से (कृष्णेन) आकर्षण से परस्पर सम्बद्ध (रजसा) लोक मात्र के साथ (आ वर्तमानः) अपने भ्रमण की आवृत्ति करता हुआ (भुवनानि) सब लोकों को (पश्यन्) दिखाता हुआ (देवः) प्रकाशमान (सविता) सूर्य देव (अमृतम्) जल वा अविनाशी आकाशदि (च) और (मर्त्यम्) मरणधर्मा प्राणिमात्र को (निवेशयन्) अपने अपने प्रदेश में स्थापित करता हुआ (आयाति) उदय अस्त समय में आता जाता है सो ईश्वर का बनाया हुआ सूर्य लोक है।

भावार्थ– हे मनुष्यो। जैसे इन भूगोल आदि लोकों के साथ सूर्य का आकर्षण है जो वृष्टि द्वारा अमृत रूप जल को बरसाता और जो मूर्त द्रव्यों को दिखाने वाला है वैसे ही सूर्य आदि लोक भी ईश्वर के आकर्षण को धारण किये हुए हैं। ऐसा जानना चाहिए।

**प्र ते महे विदथे शंसि सिषं हरी प्र**
**ते बन्वे वनुषो हर्यतं मदम्।**
**घृतं न यो हरिभिश्चारू सेचत**
**आत्वा विशन्तु हरिवर्पसं गिरः।**

ऋ 10.96.1

(ते) इस इन्द्र सूर्य के (हरी) दो अश्वों (धारण और आकर्षण) की (महे) महान् (विदथे) यज्ञ में (प्रशंसिषम्) मैं प्रशंसा करता हूँ। (वनुषः) मेघ का वध करने वाले (ते) इस इन्द्र सूर्य के सम्बन्धी (हर्यतम्) रमणीय (मदम्) सुख की (वन्वे) भगवान से कामना करता हूँ, (यः) जो (हरिभिः) जल आदि को हरण करने वाली किरणों के द्वारा (चारू) ग्रहण करने योग्य (घृतम् न) घृत के समान उत्तम जल को (सेचते) सींचता है। (हरिवर्पसम्) चमकने वाले रूप से युक्त (त्वा) इस सूर्य की प्रशंसा में (मे) मेरी (गिरः) वाणियाँ (आ विशन्तु) सर्वत्र व्याप्त होवें।

भावार्थ– सूर्य के धारण और आकर्षण गुणों की मैं यज्ञादि के महान् अवसरों पर प्रशंसा करता हूँ। मेघ का वध करने वाले इस सूर्य के द्वारा सबको दिए जाने वाले सुख की प्राप्ति की परमेश्वर से याचना करता हूँ। जो आप किरणों द्वारा घृत के समान उत्पन्न जल से पृथिवी आदि को सींचता है उस सूर्य की प्रशंसा में मेरी वाणियाँ सब व्याप्त हों।

**ता वज्रिणं मन्दि स्तोम्यं मद इन्द्र रथे**
**वहतो हर्यता हरी।**
**पुरूण्यस्मै सवनानि हर्यत इन्द्राय सोमा**
**हरयो दधन्विरे।**

ऋ 10.96.6

(ता) वे (हर्यतौ) कमनीय (हरी) धारण और आकर्षण गुण (मन्दिनम्) सबके हर्ष साधन भूत (वज्रिणम्) व्रज वाले (स्तोम्यम्) प्रशंसनीय (इन्द्रम्) सूर्य को (मदे) हर्षदायक (रथे) रमणीय संसार रथ में (वहतः) धारण करते हैं (अस्मै) इस (इन्द्राय) सूर्य के लिए (हरयः) भासमान (सोमाः) लोक (पुरूणि) बहुत से (सवानानि) प्रातः दोपहर और सायम् संवनों को (दधन्विरे) धारण करते हैं।

भावार्थ– वे कमनीय धारण और आकर्षण गुण सबके सुख के साधन, वज्र के स्वामी, प्रशस्य सूर्य को हर्षदायक रमणीय संसार रथ में धारण करते हैं। उस सूर्य के लिए इसके प्रकाश से भासमान विविध लोक प्रभूत प्रातः, मध्य और सांय सवनों को धारण करते हैं।

**दिवि त्वात्रिर धारयत् सूर्या मासाय**
**कर्तवे।**
**स एषि सुधृतस्तपन् विश्वा**
**भूतावचाकशत्।**

ऋ 13.2.12

(सूर्य) हे सूर्य (अत्रिः) सदा ज्ञानवान परमात्मा ने (मासाय) महीना (काल विभाग) (कर्तवे) करने के लिए (त्वा) तुझको (दिवि) आकाश में आधारयत् धारण किया है (सः) वह तू (सूधृतः) अच्छी प्रकार धारण किया गया (तपन्) तपता हुआ और (विश्वाभूता) सब प्राणियों को (अवचाकशत्) निहारता हुआ (एषि) चलता है।

परमात्मा ने सूर्य को बहुत से लोकों पर आकर्षण, ताप, वृष्टि आदि पहुँचाने के लिए बनाया है, मनुष्य उसी प्रकार तेजस्वी होकर पुरूषार्थ करे।

**यदा ते हर्यता हरी वावृधाते दिवे दिवे।**
**आदित्ते विश्वा भुवनानि ये मिरे।**

ऋ 8.12.28

इन्द्र जो सूर्य है, इसमें ईश्वर के रचे आकर्षण, प्रकाश और बल आदि बड़े बड़े गुण हैं। उनसे सब लोकों का दिन–दिन और क्षण–क्षण के प्रति धारण, आकर्षण और प्रकाश होता है। इस हेतु से सब लोक अपनी–अपनी ही कक्षा में चलते रहते हैं इधर–उधर विचल भी नहीं हो सकते।

**यदा ते मारू तीर्विश स्तुभ्य मिन्द्र**
**नियेमिरे।**
**आदित्ते विश्वा भुवनानि ये मिरे।**

ऋ. 8.12.29

इस मन्त्र में भी आकर्षण विद्या है। हे परमेश्वर। आपकी जो प्रजा उत्पत्ति स्थिति और प्रलय धर्मवाली और जिसमें वायु प्रधान है। वह आपके आकर्षण आदि नियमों से तथा सूर्य लोक के आकर्षण से स्थिर हो रही है। जब इन प्रजाओं को आपके गुण नियम में रखते हैं तभी सब लोक अपनी–अपनी कक्षा में घूमते और स्थान में बस रहे हैं।

**यदा सूर्यममुं दिवि शुक्र**
**ज्योतिरधारयः।**
**आदित्ते विश्वा भुवनानि ये मिरे।**

ऋ 8.12.30

हे परेश्वर। जब उन सूर्यादि लोकों को आपने रचा और आपके ही प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं और आप अपने अनन्त सामर्थ्य से उनको धारण कर रहे हो। इन सूर्य आदि लोकों का सब लोकों के साथ आकर्षण से धारण होता है।

**अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्य शम्यं**
**यजतो बृहन्तम्**
**आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा**
**रजासि तविषी दधानः।**

ऋ 1.35.4

(यजतः) प्रकाश देने वाला (चित्रभानुः) चित्र विचित्र दीप्ति युक्त (सविता) सूर्य लोक वायु (कृशनैः) तीक्ष्ण करने वाले किरण से (बृहन्तम्) बड़े (हिरण्यशम्यम्) ज्योति शान्त करने योग्य हो (अभीवृतम्) चारों ओर से वर्तमान (विश्वरूपम्) जिसके प्रकाश में बहुत रूप है उस (रथम्) रमणीय रथ (कृष्णा) आकर्षण युक्त (रजांसि) पृथिवी आदि लोकों और (तविषिम्) बल को (दधानः) धारण करता हुआ (आस्थात) अच्छे प्रकार से स्थित होता है।

भावार्थ– सूर्य आदि की उत्पति का निमित्त सूर्य आदि लोक का धारण करने वाला बलवान् सब लोकों और आकर्षण रूपी बल को धारण करता हुआ वायु विचरता है और सूर्य लोक अपने समीप स्थलों को धारण और सब रूप विषय को प्रकट करता हुआ आकर्षण शक्ति से सबको धारण करता है।

**यत्तुदत् सूद एतशं वङ्कू वातस्य**
**पर्णिना।**
**वहत् कुत्समार्जुनेयं शतक्रतुस्त्सरद्**
**गन्धर्वमस्तृतम्।**

ऋ 8.1.11

(यत्) जो (सूरः) सूर्य (एतशं) गतिशील (आर्जुनेयम्) भास्कर श्वेत वर्ण वाले (कुत्सं) तेजोरूप शस्त्र तथा (वातस्य) वायु सम्बन्धी (वङ्कू) वक्रगतिवाली (पर्णिना) पतनशील प्रकाशक और संचार रूप दो शक्तियों को (वहत्) धारण करता हुआ (तुदत्) लाकों को भेदक बनता है वह (शतक्रतुः) शतकर्मा परमात्मा ही (अस्तृतं) अनिवार्य (गन्धर्व) पृथिव्यादि लोकों को धारण करने वाले सूर्य में (त्सरत्) गूढ़गति से प्रविष्ट है।

भावार्थ– गतिशील इस सूर्य में आकर्षण और विकर्षण रूप दो शक्तियाँ पाई जाती हैं उनका धाता तथा निर्माता एक मात्र परमात्मा ही है, और सूर्य जैसे कोटानुकोटि ब्रह्माण्ड उसके स्वरूप में ओत–प्रोत हो रहे हैं। इसीलिये मन्त्र में उसको 'शतक्रतुः' सैकड़ों क्रियाओं वाला कहा है, सूर्य को 'गन्धर्व' इसलिए कहा है कि पृथिवी आदि लोक उसी की आकर्षण शक्ति से ठहरे हुए हैं। वायु सम्बन्धी कहने का अभिप्राय यह है कि तेज की उत्पत्ति वायु से होती है।

73 शास्त्री नगर, दादावाड़ी
कोटा, राजस्थान–324009

# आर्य – द्रविड़ विभाजन के भ्रम निवारण

## बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. लालजी सिंह के शोध के आधार पर

● हरिकृष्ण निगम

भारतीयों का राष्ट्रीय मनोबल तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने अपने दुष्प्रचार में दो बातें लगभग सौ साल पहले ही शामिल की थी, जिनमें पहली यह थी कि भारतीय सदैव से कालक्रम के बारे में लापरवाह रहे हैं और दूसरे विदेशी चर्च सम्प्रदायों ने तत्कालीन शासन से मिलकर यह प्रचारित किया कि हिन्दू आस्था बेबीलन में पैदा हुई और फिर भारत आई। यही बात पहले की तरह आज भी इसाई सेमिनेरियों में पढ़ाई जाती है कि हिन्दू धर्म भी भारत का मूल धर्म नहीं, प्रत्युत आयातित है। यद्यपि कालक्रम के अज्ञान धर्म बाहर से आया। नस्लीय विभाजन, आर्य द्रविड़ खाई को आविष्कृत करने में तो दशकों तक इस तरह कई विरोधाभासी शोध सरकारी संरक्षण में चलाए गए। उन मुद्दों का स्पष्ट राजनैतिक लक्ष्य था।

हमें शुरु से पढ़ाया जाता है कि भारत में हिन्दू शब्द का प्रयोग 8 वीं शताब्दी में अरब आक्रान्ताओं के आने के पश्चात प्रारम्भ हुआ। सिंध के राजा दाहिर की पराजय के बाद जब आज का वजीरिस्तान, बलूचिस्तान और सिंध सहित उत्तर पश्चिम पर मुस्लिम, आधिपत्य हो गया तब सिंधु शब्द से हिन्दू शब्द का प्रचलन शुरु हुआ था। संस्कृत भाषा में अधिकांश शब्दों में 'स' अक्षर का उच्चारण फारसी में 'ह' किया गया है। उदाहरण के लिए संस्कृत का 'सप्ताह' फारसी का 'हफ्ता', सोम – होम, असुर – अहोर, सम–हम, ये शब्द उच्चारण में विभिन्न हो गए। फारस होते हुए हिन्दू शब्द यूनान पहुँचा जहाँ उसका उच्चारण इन्दुस या इण्डस किया गया। अरबी में अंकों को 'हिन्दसे' कहते हैं क्योंकि उनकी उत्पत्ति हिन्द में हुई। इंडस 'इण्डिया' कैसे बना यह भी साफ है। योरोप में किसी देश के नाम 'इया' प्रत्यय लगाने का चलन था जैसे रोमनिया, बल्गारिया, स्लोवाकिया, एस्टोनिया, रशिया, आदि। अतः 'इण्डस' में 'स' के स्थान पर 'इया' अंग्रेजों ने स्वभावतः प्रचलित किया। वैसे यूनानी (ग्रीक) लोग प्रायः नाम के साथ 'स' प्रत्यय का प्रयोग करते थे। जैसे वे पुरुषापुर के राज पुरु को पोरस कहते थे। संस्कृत के ईश को अरबी में ईसा, हिब्रू में येशु तथा ग्रीक व रोमन में जीसस कहा जाता है। इसी प्रकार सिंधु (हिन्दू) को इण्डस कहा जाता है। ऐसे काफ़ी उदाहरण है जो योरोपीय अथवा भारतीय योरोपियन भाषा परिवार की समानता को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार हिन्दू, इंडस तथा इण्डिया का उद्भव एक ही शब्द से हुआ है वह है सिंधु!

भारतीय सभ्यता एवं हिन्दू हृदयस्थली के रूप में सिन्धु सदैव महत्वपूर्ण रहा है। सिन्धु, सप्त सिंधु, सौवीर अथवा सिंधु सागर जिसे आज अरब सागर कहने की हम सब त्रुटि भी करते हैं आज का मात्र वह क्षेत्र नहीं है, जिसे हम हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के नाम से जानते हैं तथा जो आज पाकिस्तान में है इसका फैलाव 500000 वर्ग मील (1.3 मिलियन वर्ग किलोमीटर) में था और आज पुरातात्विक खोजें इस नागरी सभ्यता को जैसे अंग्रेजों ने द्रविड़ या अनार्य संस्कृति के रूप में उछाला था नहीं मानती हैं। अमेरिकी पुरातत्वशास्त्री आज इसा से 3000 वर्ष पूर्व का मानते हैं जिसका एक सिरा पाकिस्तान का आज लरकाना है तो दूसरा दक्षिण में कच्छ और नर्मदा नदी के मुहाने भागातख तक था। यही सभ्यता पंजाब में रोपड़ और उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर तक पूर्व में फैली थी। दक्षिण पश्चिम में इसका विस्तार जुदीजे दारो और मकरान तट था। नागरी संस्कृति, दशमलव प्रणाली, पंचाग प्रणाली, नगर नियोजन, मातृ एवं शक्ति पूजा का चलन भी यहाँ था। देवी देवताओं की जो मूर्तियाँ यहाँ मिली है वैसी ही आक्सस नदी के किनारे और मेसोपोटामिया जो आज इराक में है में भी पाई गई हैं।

आज ऐसे पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध हैं जिससे सिंधु संस्कृति को ही वैदिक संस्कृति का स्थान सापेक्ष रूप कहा जा सकता है। बहुत दिनों तक हमारे इतिहासकार सरस्वती को एक काल्पनिक नदी या दन्त कथा कहते थे। पर जब से अमेरिकी उपग्रह 'लैण्ड सटाट' ने एक भव्य और विशाल नदी के अस्तित्व के चित्र जारी किए तब से उसके असली स्वरूप की चर्चा हुई है। वेदों में इसकी लगभग 50 बार आराधना की गई हैं। हिमालय से निकलने वाली 14 किलोमीटर चौड़ी यह विशाल नदी थी। नब्बे के दशक में सरस्वती क्षेत्र का पुरातात्विक अध्ययन करने वाले पाल हेनरी फैंक फोर्ट नाम विद्वान ने शोध द्वारा सिद्ध किया कि 2200 ई. पू. में सरस्वती सूखने लगी थी और जनसंख्या सिन्धु और सतजल नदियों के किनारे जा बसी। इसी तरह खम्भात की खाड़ी में समाए हुए मानवनिर्मित अवशेषों से सिद्ध होता है कि वह सभ्यता 9 किलोमीटर लम्बे नदी तट पर बसी थी तथा कार्बन डेटिंग में पता लगा है कि यह 7000 ईसा पूर्व की है।

अमेरिकी विद्वान डेविड फ्राली, स्टैन फोर्ड स्थित हूवर संस्थान से जुड़े प्रोफेसर गाई सोरमैन, आयरिश भारतवेत्ता गेरहार्ड हर्म और प्रसिद्ध लेखक पॉल विलियम राबर्ट्स – ये सभी आर्यों के द्रविड़ों पर आक्रमण के विचार का झूठा और इतिहास विरोधी ठहराते हैं। मार्क किनोयर जिन्होंने हड़प्पा के अवशेषों पर 20 साल तक कार्य किया, कहते हैं कि ऋग्वेद में एक भी सूत्र ऐसा नहीं है, जिसमें उन्होंने अपनी पहली पीढ़ी को किसी नए विजित स्थान पर आए महसूस किया था या जिस वातावरण से वे अनभिज्ञ थे। ऋग्वेद बार–बार आर्यावर्त, सप्तसिंधु तथा पूर्व में सस्वती व पश्चिम में सिंधु का यशोगान करता है।

विश्व का प्राचीनतम धर्म वैदिक हिन्दू आस्था ही है जिसको वैज्ञानिक भी यह सिद्ध कर चुके हैं कि यह उस महाद्वीपीय आकार के भूखण्ड के उस मानव से जुड़ी है जो दो मिलियन वर्षों से इस क्षेत्र को अपनी हवनस्थली बनाए हुए हैं। यहाँ के पुरातात्विक अवशेष सर्वाधिक प्राचीन रहे हैं और यहाँ से यह आस्था एक तिहाई विश्व में फैली जिसे एक समय बृहत्तर भारत हम स्वयं कहते थे।

इन सारे तथ्यों के बावजूद हमें इतिहास की पुस्तकों में पढ़ाया जाता है कि हमारे पूर्वज आर्य भारत में कहीं ईरान, मध्य एशिया, पूर्व सोवियत संघ या आर्कटिक से आकर यहाँ बसे थे। इस बात का दुष्परिणाम यह हुआ कि आर्य अथवा हिन्दू विरोधी लोग आज भी हमारी संस्कृति पर मर्मान्तक प्रहार करते हैं। हमारी राष्ट्र की अवधारणा 'सदियों' की पथ विहीन गुमनामी के बाद अंग्रेज़ों द्वारा प्रदत्त की गई! कुछ सेकुलर बुद्धिजीवियों ने तो यहाँ तक अपनी राष्ट्रविरोधी विकृति की अभिव्यक्ति दी कि यदि इसाई और मुस्लिम विदेशी हैं तो आर्य सबसे बड़े विदेशी हैं क्योंकि वे इस देश के मूल निवासी नहीं हैं और सर्वप्रथम आए थे। एक राष्ट्रविरोधी कथित बुद्धिजीवी ने तो यहाँ तक टिप्पणी कर डाली कि विदेशी आक्रमणकारी आर्यों की भाषा संस्कृत भी एक विदेशी भाषा है। हिन्दू धर्म को विभिन्न पंथों का जमघट, धार्मिक अराजकता का उदाहरण, प्रतिगामी समाज की आधारशिला अथवा नैतिकता विहीन आचरण संहिता का धर्म कहना हमारी आस्था पर कई ओर से सुनियोजित आघात करना जैसा रहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि बिना किसी ऐतिहासिक अथवा पुरातात्विक प्रमाण के आज के अनेक सेकुलर लेखक व बुद्धिजीवी धोखेधड़ी की बौद्धिक विलासिता में उलझ कर अपने ही धर्म पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। भिन्न–भिन्न प्रकार व संचार माध्यमों द्वारा यह बातें दोहराई जाती हैं और हमारे अतीत पर अपनी ही रंग भरना विरोधियों ने शुरु किया। क्या हम इन विषाक्त टिप्पणियों को अपने ही देश के अंग्रेजी मिडिया के एक वर्ग द्वारा लगातार सुनने के लिए अभिशप्त हैं?

सच देखा जाए तो हमें डॉ. लालजी सिंह को आज फिर समग्र राष्ट्रीय विस्मृति के धुंधल को बाहर निकाल कर एक प्रेरक पुरुष की तरह युवा पीढ़ी के समक्ष रखना होगा जिन्होंने पहली बार आज से एक दशक पूर्व सन 2005 में वैज्ञानिक शोध के द्वारा यह सिद्ध कर दिया था कि विभिन्न धर्म व जातियों व विश्वासों के बावजूद हर भारतीय के रक्त व धड़कनों में हमारे पूर्वजों का डी.एन.ए. समान रूप से विद्यमान है। आर्य, द्रविड़, हिन्दू, मुस्लिम, उत्तर पूर्व सभी भारतीयों की शिराओं में उसके पूर्वज हिन्दुओं का रक्त प्रवाहित हो रहा है।

ए–1802, पंचशील हाईट्स,
महावीर नगर, कांदिवली (प.)
मुबंई–400067
मो. 9820215464

हर भारतीय की अपनी पहचान सदियों के अन्तराल में धर्म परिवर्तन के बाद भी हिन्दू ही हैं क्योंकि सभी हिन्दुस्तानियों में उनके क्षेत्रीय निवास से एकदम असम्बद्ध, समान रंग सूत्रीय गुणधर्म है। डी.एन.ए. के हजारों नमूनों के परीक्षण यह सिद्ध कर चुके हैं अब तक दुष्प्रचारित आर्य – द्रविड़ सिद्धान्त की धज्जियाँ उड़ चुकी हैं और वह इतिहासकारों को भी स्वीकार्य नहीं हैं। स्पष्ट है कि हिन्दुत्व आधारित हिन्दू आधार ही असली सांस्कृतिक एकता का परिचायक है, चाहे वह आज मुस्लिम ही क्यों न हो।

डॉ सुब्रह्मण्यन स्वामी
मो0 9820215464

☞ पृष्ठ 02 का शेष

# अमृत-पान

राजा ने पूछा–"कितने लोहे का स्वर्ण बना सकता है तू?"

उसने उत्तर दिया–"जितना भी आप चाहें, परन्तु बूटी मिलती है जंगल में। आप मेरे साथ दो आदमी भेज दीजिए, मैं बूटी लेकर आता हूँ। आप लोहा एकत्रित कराइए। राज्य–भर के लोगों को भी एकत्रित कराइए। मैं सबके समक्ष सोना बनाकर दिखाऊँगा।"

बस, फिर क्या था! वह गया सिपाहियों के साथ वन में। यहाँ राजा के महल के बाहर राज्य–भर का लोहा इकट्ठा होने लगा। जिसके पास जो वस्तु लोहे की थी, वह उसको ही उठा लाया। कई–कई मन के बाट, तराजू, लोहे की छड़ियाँ, लोहे के शहतीर, चिमटे, खम्बे, बर्तन, बाल्टियाँ, डोल, सब इकट्ठे हो गए। कई लोगों को दूसरी वस्तुएँ नहीं मिली, तो वे ताले, चाबियाँ, कील, सलाइयाँ ही उठा लाए। सभा लग गई। सब लोग एकत्रित हो गए। कृषक भी आ गए, दुकानदार भी, ठेकेदार भी, मंत्री और राज्य–कर्मचारी, सब इकट्ठे हो गए।

तभी वह व्यक्ति जंगल से बूटी लेकर आ गया। हाथ से मलकर बूटी उसने एक मेज़ पर रख दी और बोला–"महाराज! यह है बूटी। इसको लोहे के एक ढेर पर डाल देने से सोना बन जायेगा। परन्तु शर्त यह है कि बूटी को उठाकर वही व्यक्ति लोहे पर डाले, जिसने कभी जीवन में चोरी न की हो। मुझे तो आप जानते हैं। मुझे तो चोरी के कारण फाँसी का दण्ड मिला है। मैं तो यह कर नहीं सकता। बड़े–बड़े मन्त्री, पदाधिकारी, राज्य–कर्मचारी और अन्य लोग यहाँ विद्यमान हैं। उनमें से ऐसे मिल जायेंगे, जो इस बूटी को लोहे पर डाल सकें। उन्हें कहें कि बूटी को उठायें और लोहे पर डाल दें।"

राजा ने कहा–"हाँ, ऐसा तो हो सकता है।" तब वह किसान और भू–स्वामियों की ओर देखकर बोला–"क्यों भाई कृषको और भू–स्वामियो! तुममें से ऐसा कौन है, जिसने जीवन में कभी चोरी न की हो?"

कृषक थोड़ी देर चुप रहे। तब उनके चौधरी ने उठकर कहा–"महाराज! आप तो जानते हैं, हम लोग अपने पशुओं को खिलाने के लिए एक–दूसरे के खेत से चारा काट लेते हैं। फिर यह चोरी तो हो गई! हममें ऐसा व्यक्ति कहाँ मिलेगा?"

राजा ने दुकानदारों की ओर देखा, बोले–"भाई! तुममें से ऐसा व्यक्ति तो कोई होगा, जिसने कभी चोरी नहीं की?"

दुकानदारों के नेता ने कहा–"महाराज! हम लोग तो अपनी करतूत के लिए प्रसिद्ध हैं। किसी वस्तु को एक सेर तोलते हैं, जो घर जाकर पन्द्रह छटाँक निकलती है। चोरी तो हो गई! हममें से कौन कहेगा कि उसने जीवन में कभी चोरी नहीं की?"

राजा ने ठेकेदारों की ओर देखा, बोले–"तुम?"

ठेकेदारों ने कहा–"महाराज! हमारी तो प्रतिदिन रिपोर्ट होती रहती है। हम पुल बनाने का ठेका लेते हैं। उसमें सीमेंट के स्थान पर रेत डाल देते हैं। दो ही वर्षों के पश्चात् पुल टूट जाता है। फिर कैसे कहें कि हमने चोरी नहीं की?"

राजा ने राज्य–कर्मचारियों की ओर देखा तो वे बोले–"महाराज! आप वेतन देते हैं थोड़ा, फिर भी हम बड़ी–बड़ी कोठियाँ बनवाते हैं। वे जिस प्रकार बनती हैं, यह आप भी जानते हैं और हम भी। फिर कैसे कहें कि हमने चोरी नहीं की!"

राजा ने मन्त्रियों की ओर देखा। उन्होंने भी यही उत्तर दिया। अब राजाजी घबराए। अपने छोटे भाई की ओर देखकर बोले–"तुम ही उठो। तुमने कभी चोरी नहीं की।"

भाई ने कहा–"महाराज! सच्ची बात यह है कि एक बार चोरी मैंने भी की थी। मैं जब प्रिंस कॉलेज में पढ़ता था तो मेरा मित्र एक बहुत ही सुन्दर पुस्तक खरीदकर लाया। बहुत सुन्दर चित्रों की पुस्तक थी वह। मित्र दूसरे कमरे में गया तो मैं उसकी पुस्तक उठाकर चला आया। मुझसे यह कार्य नहीं होगा।"

राजा ने तंग आकर कहा–"तब मैं ही इस बूटी को उठाकर लोहे पर डालता हूँ।" परन्तु तभी वह रुक गया, बोला–"स्मरण पड़ता है कि चोरी तो एक बार मैंने भी की थी। मुझे हो गया था मियादी ज्वर। डॉक्टर ने कुछ भी खाने से मना कर दिया था। अपनी माताजी के पास मैंने पेड़े देखे। हठ की कि पेड़े खाऊँगा। माताजी ने मना करते हुए कहा–'नहीं, तुझे डॉक्टर ने मना कर दिया है।' और पेड़ों को अलमारी में रखकर वह दूसरे कमरे में चली गई। उनकी अनुपस्थिति में मैं चुपके से उठा। अलमारी से पेड़े उठाकर खा गया। माताजी को बताया नहीं, परन्तु चोरी तो मैंने भी की।"

चोर कहने लगा–"जब सारे ही चोर हैं, तो मुझ अकेले को ही फाँसी क्यों? सबको दो!"

अपनी त्रुटियों को दूर करने के लिए अपने दोषों को देखो! दूसरों के दोषों को देखने से अपने अवगुण दूर नहीं नहीं होते। और फिर यह भी देखिए कि त्रुटियाँ और कमियाँ तो प्रत्येक में हैं। सम्पूर्ण गुण तो केवल ईश्वर में हैं।

**इस दुनिया में सब चोर चोर।**
**कोई छोटा चोर, कोई बड़ा चोर।**

### जैसी जाकी भावना

स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी एक कथा सुनाया करते थे। एक वृद्धा स्त्री थी। भारी–सी गठड़ी उसके सिर पर थी; चली जाती थी अपने ग्राम से किसी दूसरे ग्राम की ओर। चलते–चलते थक गई। तभी उसने एक व्यक्ति को देखा, जो घोड़े पर बैठा वेग से चला जाता था। उसे देखकर बुढ़िया ने आवाज़ दी–"अरे ओ बच्चा! ओ घोड़ेवाले! एक बात तो सुन!"

घोड़ेवाले ने सुना। यह देखने के लिए रुक गया कि बुढ़िया क्या कहती है। घोड़े को रोककर बोला–"क्या बात है माई?"

वृद्धा ने कहा– "पुत्र! मुझे उस सामनेवाले ग्राम में जाना है। थक बहुत गई हूँ। यह गठड़ी मुझसे उठाई नहीं जाती। तू भी उधर जा रहा है। यह गठड़ी घोड़े पर रख ले तो मुझे सरलता हो जाए।"

अश्वारोही ने कहा–"माई! तू है पैदल, मैं हूँ घोड़े पर। ग्राम अभी काफी दूर है। पता नहीं तू कब तक वहाँ पहुँचेगी! मैं अभी पाँच मिनट के पश्चात् वहाँ पहुँचकर आगे चला जाऊँगा। तब मैं क्या तेरी प्रतीक्षा करता रहूँगा?"

यह कहकर वह चला गया। परन्तु अभी दो ही फर्लांग गया था तो उसके मन ने कहा–'तू भी विचित्र मूर्ख है! वह वृद्धा है, शीघ्र चल भी नहीं सकती। तुझे गठड़ी देती थी। गठड़ी में कोई मूल्यवान् वस्तु भी हो सकती है। उसे लेकर तू चला जाय तो तुझे पूछनेवाला कौन? चल वापस, उससे गठड़ी ले ले।'

अब देखिए कि एक व्यक्ति का विचार दूसरे के मन पर कैसे प्रभाव डालता है। अश्वारोही वापस आया। वृद्धा के पास पहुँचकर बोला–"माई! ला, दे–दे अपनी गठड़ी। मैं ले चलता हूँ। उस ग्राम में पहुँचकर तेरी प्रतीक्षा करूँगा।"

वृद्धा ने कहा– "ना बच्चा! अभी तू जा। मुझे गठड़ी नहीं देनी है।"

घुड़सवार ने कहा– "अरे! अभी तो तू कह रही थी कि गठड़ी ले चल। अब ले चलने को तैयार हुआ तो कहती है कि गठड़ी नहीं देनी। यह उलटी बात तुझे किसने समझाई है?"

वृद्धा मुस्कराकर बोली–"उसने समझाई है, बच्चा, जिसने तुझे यह समझाया कि माई की गठड़ी ले–ले। जो तेरे भीतर बैठा है, वही मेरे भीतर भी बैठा है। तुझे उसने कहा कि गठरी ले–ले और भाग जा। मुझे उसने समझाया कि गठड़ी नहीं देनी, नहीं तो भाग जायेगा। अतः तू जा भाई! मैं अपनी गठड़ी स्वयं ही ले जाऊँगी।"

इस प्रकार एक मन का विचार दूसरे मन के विचार पर प्रभाव डालता है। अतः भूलकर भी मन में खोटे विचार न आने दो!

क्रमशः

# गुरुकुल हरिपुर, जुनानी की ओर से अन्न-वस्त्र सहयोग

"नर सेवा ही नारायण सेवा है" इस कहावत को ध्यान में रखकर गुरुकुल हरिपुर, जुनानी समय–समय पर ओड़िशा एवं ओड़िशा से बाहर राज्यों में गरीबों, अनाथों, विधवाओं, विधुरों एवं दिव्यांग भाई–बहनों, माताओं एवं वृद्ध असहाय महानुभावों को अन्न व वस्त्र सहयोग के रूप में प्रदान करते रहता है। इसी क्रम में नुआपड़ा जिला के विभिन्न गांवों के 500 परिवार को 25–25 किलो चावल, एक–एक साड़ी एवं पतंजलि का एक–एक गुलाब शर्बत प्रदान किया गया। ध्यान रहे ऐसे असहाय व्यक्तियों को सहयोग किया गया जो वितरण केन्द्र तक बड़ी मुश्किल से आये। वितरण केन्द्रों में पहले वैदिक यज्ञ, प्रवचन तदुपरान्त सहयोग लेने आये हुए जनों को सहयोग प्रदान किया गया। कार्यक्रम में आये हुए सभी महानुभावों के लिये भोजन का उचित प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया गया था।

यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के हितैषी श्री विजय कुमार लाहोटी, रायपुर की उपस्थिति में गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य की देख–रेख में गुरुकुल के आचार्य श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु श्री राजेन्द्र कुमार वर्णी, वकील संघ नुआवड़ा जिला के अध्यक्ष श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी, गुरुकुल के अनन्य सहयोगी श्री ताराकान्त प्रधान, श्री दिलीप कुमार साहु, श्री कार्तिक दीप आदि तथा स्थानीय महानुभावों के पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ।

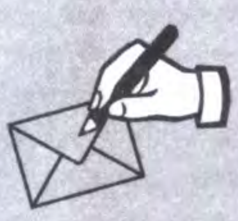

# पत्र/कविता

## बिन त्याग बलिदान के, कभी ना मिलता ज्ञान

बिना तेल दीप बुझे, अंधकार हो जाय।
कर्म–हीन कैसे जिये, मृत्यु गति ही पाय।।

सबसे अच्छा काम वह, सबके हित का होय।
स्वार्थ में बुरा करो, उससे अधम न कोय।।

देह दे दी देही को, मन्दिर उसका मान।
साधन का उपयोग कर, सदकर्म पूजा जान।।

सेवा और त्याग से, मिल जाते अधिकार।
कर्तव्य बिना अधिकार, माँगे तू बेकार।।

त्यागपूर्वक भोग कर, ईश्वर सब कुछ देत।
अपना जान मोह करे, यही दुखों का हेत।।

सत्य दान करम क्षमा, धीरज और ज्ञान।
कभी न इनको छोड़ना, अपना लेना मान।।

बिन त्याग बलिदान के, कभी ना मिलता ज्ञान।
जो अहं को त्यागता, मिलता उसको ज्ञान।।

ज्ञान धन बाँटे बढ़े, हाथ मेहंदी रंग।
ज्ञान बाँटे से जगे, मन में नयी उमंग।।

बादल बन बरसो सदा, करके पर उपकार।
काम किसी के न आय, वह तो है बेकार।।

त्याग जीवन में करो, ईश्वर पर विश्वास।
मन चाहा सब पा सको, ईश तुम्हारे पास।।

**नरेन्द्र आहूजा विवेक**
**602, जी.एच. 53 सै.–20**
**पंचकूला, हरियाणा**

## इन महाठगों को महादंड मिले

हीरा व्यापारी नीरव मोदी और पेन व्यापारी विक्रम कोठारी कितने रुपए खा गए? सिर्फ 14095 करोड़ रु.! मैं इस राशि को सिर्फ क्यों कह रहा हूँ? क्योंकि पिछले साढ़े पाँच साल में हमारी बैंकों के 3 लाख 68 हजार करोड़ रूपए खाए गए हैं। यह इतनी बड़ी राशि है कि दुनिया के ज्यादातर देशों के कुल बजट से भी ज्यादा है। भारत के हर गाँव पर इस राशि में से 50 लाख रूपए लगाए जा सकते हैं। यानी भारत नंदनवन बन सकता है। लेकिन रिजर्व बैंक के ताजा आँकड़ों के अनुसार इतनी राशि डूबतखाते में लिख दी गई है। देश की 27 सरकारी बैंकों और 22 निजी बैंकों की इस राशि को देश के पूँजीपति जीम गए हैं। निजी बैंकों के मुकाबले सरकारी बैंकों को पाँच गुना ज्यादा लूटा गया है, क्योंकि इन बैंकों की लूट में नेताओं और पूँजीपतियों की मिलीभगत होती है। नेता लोग दबाव डालते हैं और पूँजीपतियों की 10 करोड़ की संपत्ति को 100 करोड़ में गिरवी रखवा देते हैं। पंजाब नेशनल बैंक की ठगी से मालूम पड़ा है कि उच्च पदस्थ प्रबंधकों को भी नियमित कमीशन (रिश्वत) मिलता है। रिजर्व बैंक की रपट के बाद मोदी और कोठारी के दो मामले खुले हैं। देश में सैकड़ों मोदियों और कोठारियों को अभी रँगे हाथ पकड़ा जाना है। कहीं ऐसा न हो कि ये सब बैंक दिवालिया घोषित हो जाएँ। लोग डर के मारे अपना सब जमा पैसा निकालकर घर में रखना शुरू कर दें। सरकारों पर से भी लोगों का भरोसा उठ सकता है, क्योंकि ये महाठग सभी सरकारों को पटाकर रखते हैं। लेकिन संतोष की बात है कि सरकार की नींद खुलने पर वह आनन–फानन छापे मार रही है लेकिन डर यही है कि कहीं बोफोर्स और 2 जी की तरह ये मामले भी रफा–दफा न हो जाएँ। छोटे–मोटे कर्जों के लिए किसानों पर अहसान जताने वाली इन सरकारों को चाहिए कि इन मोटे मगरमच्छों को वह आजीवन कैद या सीधे फाँसी करवाए और उनके सभी निकट रिश्तेदारों की पाई–पाई भी जब्त करवा दे। बैंकों के भ्रष्ट अधिकारियों को भी कठोरतम सजा दी जाए और उनकी समस्त संपत्ति जब्त की जाए। संसद में वैसा कानून पास करें और इन ठगों की हड्डियों में कँपकँपी दौड़वा दे।

**डॉ. वेद प्रताप वैदिक**
**dr.vaidik@gmail.com**

**********

## मंत्री जी के आदमी

राजस्थान में चुरू जिला जबर्दस्त गर्मी और सर्दी के अलावा अलमस्तों के शहर के रूप में जाना जाता है। पिछले लगभग ढाई दशकों से चूरू के लोकप्रिय नेताओं में एक असरदार मंत्री हैं। जो छात्र नेता होने के साथ राजस्थान सरकार में दो दफा चिकित्सा मंत्री, सार्वजनिक निर्माण मंत्री, ग्रामीण विकास मंत्री जैसे पदों पर रहने से राज्य में लोकप्रिय रहे हैं। मगर चुरू नगर की लोकप्रियता की बात ही कुछ और है। अधिकांश नगर वासी अपने आपको मंत्री जी का खास आदमी घोषित किए हैं और उनका दावा है कि 'मंत्री जी को जेब में रखते हैं।'

ट्रैफिक वाले ने ग़लत साइड चलने पर वाहन रोक लिया, डाक्टर ने तथाकथित खास को प्राथमिकता नहीं दी, सरकारी कार्यालयों में काम अटक गया, पुलिस थाना में कोई काम आ गया तो झट से खास आदमी मंत्री जी को शिकायती लहज़े में जोश से फोन करते हैं। मंत्री जी की भी मजबूरी है जो अपनी लोकप्रियता बरकरार रखने के लिए शिकायती फोन को तवज्जो देते हैं एवं सम्बन्धित कर्मी, डाक्टर, अधिकारी, थानेदार आदि को तथाकथित खास आदमी का कार्य तुरंत करने का आदेश फरमाते हैं।

बस सफर में नगर के एडवोकेट ललित गौतम को कोई सहयात्री कुछ तेज़ आवाज़ में एक किस्सा बता रहे थे। यह लेखक भी पास की सीट पर बैठा सहयात्री की बात सुन रहा था। पाठक वृंद भी किस्से का जायज़ा लें–

चुरू रेलवे स्टेशन एरिया का एक दुकानदार प्रतिदिन स्टेशन के अन्दर स्थित शौचालय में नित्य नेम से 'फारिग' होने आता था। स्टेशन वालों ने उन्हें कई बार टोका, मगर वह दुकानदार हर बार मंत्री जी की धौंस दिखा देता रहा। एक बार जब वह दुकानदार शौचालय में दाखिल हुआ तो स्टेशन मास्टर के आदेश से बाहर से शौचालय को ताला लगा दिया। स्टेशन के दुकानदार ने शौचालय के अन्दर से मोबाइल पर मंत्री जी को कहा कि उन्हें, शौचालय में बंद कर दिया गया है, उसे तुरंत खुलवाएँ? मंत्री जी झुँझला गए। उन्होंने स्टेशन मास्टर को फोन तो किया, मगर उनकी व उनके खास की स्थिति हास्यास्पद हो गई। खैर, खास ने शौचालय से शपथ ली कि आइन्दा 'फारिग' होने स्टेशन नहीं आऊँगा। ताला तो खुलना ही था क्योंकि फोन पर मंत्री जी का रिक्वेस्ट कम आर्डर जो था।

**दिलचस्प**
**चूरू (राजस्थान)**

**********

# आर्य समाज अलवर में नवसंवत्सर पर हुआ यज्ञ एवं चिकित्सा जाँच शिविर

आर्य समाज, अलवर मे नवसंवत्सर 2075 एवं आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः विशेष यज्ञ हुआ उसके उपरान्त ओ३म् का ध्वजारोहण किया गया जिसमें समाज के सभी पदाधिकारी, सदस्य एवं आर्य समाज के गणमान्य जन उपस्थित रहे।

98वाँ आयुर्वेद बाल रोग निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल; स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में प्रातः 10.00 बजे से 12.00 बजे तक स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय श्री नारायण दत्त गुप्ता की 93वीं जयन्ती के अवसर पर लगाया गया।

शिविर में वैद्य भगवान दास मित्तल ने लगभग 20 बच्चों की कमजोरी, सांस में तकलीफ, हृदय रोग, कुपोषण एवं मौसमी बीमारियों व समस्त रोगों का निःशुल्क इलाज किया और निःशुल्क आयुर्वेदिक दवाइयाँ दीं। डॉ. डी. सी. शर्मा जिला मातृ शिशु एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि.) ने मरीजों को निःशुल्क इलाज परामर्श दिया। 25 रोगियाँ की निःशुल्क मधुमेह की जाँच की गई तथा रोगियों को निःशुल्क एलोपैथिक दवाइयाँ दी गई। श्री रमन गुप्ता ने लगभग 25 लोगों का ओरा चैक अप किया।

# सहारनपुर में महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव पर विशेष कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर आर्य समाज खलासी लाईन के प्रांगण में यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान श्री रोशनलाल अरोड़ा रहे। यज्ञ वैदिक विद्वान सुरेन्द्र चौहान के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञीय प्रार्थना के उपरांत वैदिक भजनोपदेशक श्री रविकांत राणा तथा योगराज शर्मा ने भजनों के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय तत्पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डालते हुए वैदिक विदुषी श्रीमती रश्मि गर्ग जी ने शिवरात्रि पर्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को सच्चे शिव के आभास का सजीव चित्रण किया और कहा उनके मन में यह भाव आया जो शिव अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह अन्यों की रक्षा क्या करेगा। आर्य शिक्षा निकेतन के बच्चों ने कहा शिवरात्रि ऋषिवर की याद हमें दिलाती है, यह सच्चे शिव का ज़ीवन में आभास हमें कराती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। गृहस्थ में रहते हुए उनकी शिक्षाओं पर आचरण करना चाहिए तभी बोधोत्सव मनाना हमारे लिए सार्थक होगा और कहा **"वयं स्याम् पतयो रयीणाम्"** हे प्रभु हम लोग धन ऐश्वर्यों के स्वामी हों। इस मंत्र का उन्होंने विस्तार से वर्णन किया। (ऋग्वेद 10.121.10)

# आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का 74 वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का 74 वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभागृह में मनाया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद के मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ प्रातः 8.00 बजे से 10.00 बजे तक आयोजित किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली) एवं वेदपाठी पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री एवं पं. प्रभारजंन पाठक थे।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'वैदिक पुस्तक मेला' विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा जिसमें सिर्फ महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थों की प्रदर्शनी एवं उनका विक्रय किया गया।

वर वधु चयन सेवा का परिचय मिलन सम्मेलन हुआ जिसमें अनेक युवक युवतियों ने भाग लिया।

आर्य पुरोहित सभा मुबंई द्वारा **"वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीयता"** विषय पर कवि सम्मेलन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया।

"आर्य महिला सम्मेलन" श्रीमती विद्योत्मा बांगिया (नेरूल) की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती विरमी देवी अग्रवाल (वाशी) थीं।

यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त पुरस्कार समारोह का शुभारम्भ हुआ। श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान् पुरस्कार स्वामी सौम्यानन्द (मथुरा) को दिया गया। पुरस्कार स्वरूप रुपए 30000/– का चैक, शॉल, ट्रॉफी, श्रीफल से सम्मानित किया गया। "वेदांग पुरस्कार आचार्य पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली) को दिया गया। उन्हें वेदांग पुरस्कार स्वरूप रुपए 60000/– का चैक स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल व मोतीमाला से सम्मानित किया गया।

स्व. नारायणदास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार आचार्य सत्यजीत (अजमेर) को मिला। मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार (हरिद्विरा) को दिया गया। इन दोनों को पुरस्कार स्वरूप रुपए 40000/– का चैक स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल व मोतीमाला से सम्मानित किया गया।

श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार आचार्या नीरजा (तेलंगाना) को दिया गया। श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार डॉ. शारदा जी (ओडिशा) को मिला। पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार प्राप्तकर्ता आचार्य सुदर्शन देव जी (ओडिशा) को मिला। स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान् पुरस्कार आचार्य बुद्धदेव शास्त्री जी (ओडिशा) को मिला। श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक पुरस्कार ब्र. अरूण (तेलंगाना) को मिला। इन सभी को पुरस्कार स्वरूप रूपए 30000/– का चैक स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल व मोतीमाला से सम्मानित किया गया।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

# डी.ए.वी. की तरक्की ...

व डी.ए.वी. गान से किया गया। छात्रों द्वारा एक शब्द गाया गया। कॉलेज के सेवानिवृत प्राध्यापक व सेवा निवृत नॉन टीचिंग स्टाफ कार्यक्रम में शामिल रहे।

प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा ने स्वागत किया और डॉ. रमेश आर्य जी का परिचय देते हुए कहा कि आप ने लंदन विश्वविद्यालय से एम डी की डिग्री हासिल की है, व ब्लड कैंसर बीमारी के विशेषज्ञ है। प्राचार्य ने छात्रों को पुस्तकें पढ़ कर जीवन में नई उच्चाईयों को छूने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का आरम्भ 'ईमप्रोवाईजेशन' नामक स्किट से किया गया जिसमें छात्रों ने अभिनय कौशल का परिचय दिया।

डॉ. रमेश आर्य जी ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर व सम्पूर्ण पंजाब के विविध रंगों की झलक एक मंच पर देखने की खुशी प्रकट की डी.ए.वी. संस्था व आर्य समाज की तरक्की को लेकर आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी के स्वप्न से छात्रों को अवगत कराया। उन्होंने छात्रों को डी.ए.वी. की तरक्की के लिए वचनबद्ध रहने को कहा।

श्री पी.डी.गोयल जी ने डॉ. रमेश आर्य जी का इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए धन्यवाद किया। साथ ही उनकी योग्यता, कर्त्तव्यनिष्ठता के बारे में बताया व कॉलेज की प्रगति का श्रेय कॉलेज प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा व उनके कर्मठ स्टॉफ व होनहार छात्रों को दिया। स्वामी सर्यूदेव जी ने भी तरंग कार्यक्रम की प्रशंसा की व संस्था की दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की की आशा व्यक्त की।

पंजाबी संस्कृति की रंग–बिरंगी छटा बिखेरता एक मंत्र मुग्ध करने वाला लोकगीत छात्र रूपीन्द्र द्वारा पेश किया गया। पंजाबी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ईंटर जोनल यूथ फस्टीवल में स्वर्णपदक प्राप्त करने वाला, श्री अमनदीप मोनी द्वारा लिखित व निर्देशित एकांकी 'धीयां ते कहानियाँ' की प्रस्तुति व अभिनय कौशल की ऊँच्चाईयों को संस्पर्श करते इस नाटक ने दर्शकों को बहुत प्रभावित व भावुक किया। पजांब का लोकनाच गिद्दा प्रस्तुत किया। गिद्दे की तालियों व ढोलक की थाप ने आकाश को गुंजायमान कर दिया।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 28/29-03-2018

# डी.ए.वी. पिहोवा में हुआ ऋषि स्मृति में यज्ञ का आयोजन

डी.ए.वी. कॉलेज पिहोवा (कुरूक्षेत्र) में महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति में कॉलेज परिसर की यज्ञशाला में यज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें कॉलेज के सभी प्राध्यापकगण एवं छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. कामदेव झा ने मुख्य यजमान के रूप में यज्ञ किया एवं महर्षि दयानन्द पर व यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। यज्ञ के पश्चात् डी.ए.वी. कॉलेज, पिहोवा के पूर्व प्राचार्य एवं आर्य समाज, डी.ए.वी. कॉलेज मार्ग, अम्बाला शहर के प्रधान प्रिंसीपल जे. एस. नैन ने विस्तारपूर्वक महर्षि दयानन्द के जीवनचरित्र पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने न केवल पाखण्ड को समाप्त किया अपितु नारी शिक्षा के मार्ग को भी प्रशस्त किया। जिसके कारण आज सम्पूर्ण भारत में "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" के नारे के रूप में दिख रहा है इसके मूल में उसी मूलशंकर की अवधारणा दिखती है। इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री जे.एस. नैन व आर्य समाज, अम्बाला के सचिव श्री श्याम सुन्दर को ओ३म् का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस सारे कार्यक्रम के मंच का संचालन प्रो. अजय मोहन ने किया। अन्त में डॉ. मेजर सिंह ने मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों का धन्यवाद किया।

# सोहन लाल डी.ए.वी. अम्बाला शहर में प्लेसमेंट प्रक्रिया सम्पन्न हुई

ट्रेनिंग प्लेसमैंट और काऊँसलिंग विभाग, सोहन लाल डी.ए. वी. कॉलेज ऑफ एजूकेशन, अम्बाला शहर ने कैंपस इन्टरव्यू और कैरियर फैस्ट आयोजित किया। लगभग 103 छात्र–अध्यापकों ने इंटरव्यू में भाग लिया। जिसके तहत उन छात्रों के विषय संबंधी ज्ञान तथा संचार कौशल का परीक्षण किया गया। लगभग 60 के करीब छात्र–अध्यापक विभिन्न स्कूलों द्वारा शॉर्ट लिस्ट किये गये।

इसमें सोहन लाल डी.ए.वी. गर्ल्ज सीनियर सकैण्डरी स्कूल, अम्बाला शहर, मुरलीधर डी.ए.वी. स्कूल, अम्बाला शहर, चमन वाटिका गुरुकुल, अम्बाला शहर और डी.ए.वी. मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर, माईड ट्री स्कूल, अम्बाला शहर, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कुरुक्षेत्र, डी.ए. वी. सैन्ट पब्लिक स्कूल, बराड़ा, पुलिस डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, अम्बाला शहर, के.पी.ए.के महाविद्यालय, अम्बाला शहर, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, नारायणगढ़, पैरामाउन्ट कौन्वैन्ट स्कूल, अकबरपुर, नारायणगढ़ के विभिन्न स्कूलों ने कैरियर फैस्ट में भाग लिया और अपने स्कूल में रिक्त पदों के लिए इंटरव्यू लिया। यह ज्ञातव्य है कि सोहन लाल डी. ए. वी. प्रति वर्ष, यह फैस्ट अपने कॉलेज में आयोजित करता है। छात्र–अध्यापक को इस प्रकार, प्रसिद्ध स्कूलों में रोजगार प्राप्त करने के सुअवसर मिलते है।

प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने कहा कि उच्च शिक्षा की संस्थाओं में रोजगार बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। ट्रेनिंग प्लेसमैंट और काऊँसलिंग विभाग की कोओरडीनेटर डॉ. नीलम लूथरा ने बताया कि हमारा सैल इस प्रकार के फैस्ट के आयोजन से, स्कूलों, छात्र–अध्यापकों और पढ़ाई पूरी कर चुके विद्यार्थियों में एक सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता करता है।

# डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर के छात्रों ने पंजाब यूनिवर्सिटी में 26 में से 23 पुरस्कार जीते

पंजाब विश्वविद्यालय के जोनल स्किल–इन–टीचिंग प्रतियोगिताओं में डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर के विद्यार्थियों ने स्वर्ण जयंती के वर्ष में अपनी अध्यापन सर्वश्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए जोन–डी में अपनी जीत का डंका बजाया है तथा एक और स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया है। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) उर्मिल सेठी ने बड़े गर्व से बताया कि उनके विद्यार्थियों ने स्किल–इन–टीचिंग प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक 23 पुरस्कार जीतकर अपने आपको पूरे इलाके तथा जोन–डी में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुत किया हैं उन्होंने बताया कि कोई भी ऐसा विषय नहीं रहा जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी जीत का परचम न फहराया हो। इस मौके उन्होंने स्किल–इन–टीचिंग इंचार्ज डॉ. अमनदीप कौर, श्रीमान अजय खोसला और मैडम अंजना धवन के साथ समूह स्टाफ और विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने बताया कि कॉलेज ऑफ एजुकेशन अबोहर में स्किल विषय गृह विज्ञान में भाविका, गणित में संचिता छाबड़ा, विज्ञान में स्वाति ने प्रथम, कंप्यूटर विज्ञान में मन्नू दाबड़ा ने तीसरा वहीं दूसरी ओर टीचिंग ऐड में सुगंधा ने गृह विज्ञान में प्रथम, कंप्यूटर विज्ञान में अमनप्रीत ने द्वितीय, गणित में रविंद्र कंबोज ने तृतीय स्थान हासिल किया। बावा निहाल सिंह बी.एड कॉलेज, श्री मुक्तसर साहिब में भाषा हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी, संस्कृत, फाइन आर्ट्स (ललित कला), शारीरिक शिक्षा विषय की स्किल हिंदी में प्रथम स्थान तमन्ना ने, आरूही ने ललित कला, निशु रानी ने शारीरिक शिक्षा में प्रथम, संजय ने पंजाबी में तृतीय स्थान और ऑन द स्पॉट टीचिंग एड बनाने में, संदीप कुमार ने, संस्कृत में, निशु रानी ने शारीरिक शिक्षा में, सरिता ने, ललित कला में प्रवीना ने, अंग्रेजी में प्रथम, अनमोल ने पंजाबी में तृतीय स्थान तथा गुरु गोबिंद सिंह शिक्षा महाविद्यालय, गिदड़बाहा में स्किल अर्थशास्त्र में रेखा ने, सामाजिक शिक्षा में सरिता ने, कॉमर्स में कोमल, इतिहास शिक्षण में जयप्रीत कौर ने प्रथम तथा वहीं दूसरी ओर टीचिंग एड मेकिंग में सौरभ ने कॉमर्स में, इतिहास शिक्षण में अमनप्रीत कौर ने प्रथम, अर्थशास्त्र में मनप्रीत कौर ने द्वितीय स्थान हासिल किया। इस मौके पर सभी अध्यापक गणों ने विद्यार्थियों को बधाई दी। विजेता विद्यार्थियों के कॉलेज पहुँचने पर उनको सम्मानित किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**